آيَاتُهَا ٤٠ ❀ (٧٨) سُوْرَةُ النَّبَاِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकूआ़त 2	(78) सूरतुन नबा ख़बर	आयात 40

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

عَمَّ يَتَسَآءَلُوْنَ ١ عَنِ النَّبَاِ الْعَظِيْمِ ٢ الَّذِىْ هُمْ

वह	जो-जिस	2	बड़ी ख़बर (क़ियामत)	से (बाबत)	1	आपस में पूछते हैं	क्या-किस

فِيْهِ مُخْتَلِفُوْنَ ٣ كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ٤ ثُمَّ كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ٥ اَلَمْ

क्या नहीं	5	अ़नक़रीब जान लेंगे	फिर हरगिज़ नहीं	4	अ़नक़रीब जान लेंगे	हरगिज़ नहीं	3	इख़्तिलाफ़ करते हैं	उस में

نَجْعَلِ الْاَرْضَ مِهٰدًا ٦ وَّالْجِبَالَ اَوْتَادًا ٧ وَّخَلَقْنٰكُمْ

और हम ने तुम्हें पैदा किया	7	कीलें	और पहाड़	6	बिछौना	ज़मीन	हम ने बनाया

اَزْوَاجًا ٨ وَّجَعَلْنَا نَوْمَكُمْ سُبَاتًا ٩ وَّجَعَلْنَا الَّيْلَ لِبَاسًا ١٠

10	ओढ़ना (पर्दा)	रात	और हम ने बनाया	9	आराम (राहत)	तुम्हारी नींद	और हम ने बनाया	8	जोड़े जोड़े

وَّجَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا ١١ وَبَنَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا ١٢

12	मज़बूत (आस्मान)	सात	तुम्हारे ऊपर	और हम ने बनाए	11	कमाने का वक़्त	दिन	और हम ने बनाया

وَّجَعَلْنَا سِرَاجًا وَّهَّاجًا ١٣ وَّاَنْزَلْنَا مِنَ الْمُعْصِرٰتِ

पानी भरी बदलियां	से	और हम ने उतारी	13	चमकता हुआ	चिराग़	और हम ने बनाया

مَآءً ثَجَّاجًا ١٤ لِّنُخْرِجَ بِهٖ حَبًّا وَّنَبَاتًا ١٥ وَّجَنّٰتٍ اَلْفَافًا ١٦ اِنَّ

बेशक	16	और बाग़ पत्तों में लिपटे हुए	15	और सब्ज़ी	दाना (अनाज)	उस से	ताकि हम निकाले	14	बारिश मूसलाधार

يَوْمَ الْفَصْلِ كَانَ مِيْقَاتًا ١٧ يَّوْمَ يُنْفَخُ فِى الصُّوْرِ

सूर में	फूंका जाएगा	दिन	17	मुक़र्रर वक़्त	है	फ़ैसले का दिन

فَتَاْتُوْنَ اَفْوَاجًا ١٨ وَّفُتِحَتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ اَبْوَابًا ١٩

19	दरवाज़े	तो हो जाएंगे	आस्मान	और खोला जाएगा	18	गिरोह दर गिरोह	फिर तुम चले आओगे

وَّسُيِّرَتِ الْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا ٢٠ اِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ

है	दोज़ख़	बेशक	20	सराब	तो हो जाएंगे	पहाड़	और चलाए जाएंगे

مِرْصَادًا ٢١ لِّلطّٰغِيْنَ مَاٰبًا ٢٢ لّٰبِثِيْنَ فِيْهَآ اَحْقَابًا ٢٣

23	मुद्दतों	उस में	वह रहेंगे	22	ठिकाना	सरकशों के लिए	21	घात

لَا يَذُوْقُوْنَ فِيْهَا بَرْدًا وَّلَا شَرَابًا ٢٤ اِلَّا حَمِيْمًا وَّغَسَّاقًا ٢٥

25	और बहती पीप	गर्म पानी	मगर	24	पीने की चीज़	और न	ठन्डक	उस में	न चखेंगे

جَزَآءً وِّفَاقًا ٢٦ اِنَّهُمْ كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ حِسَابًا ٢٧

27	हिसाब	तवक़्क़ो नहीं रखते थे	बेशक वह	26	पूरा	बदला

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
लोग आपस में किस के बारे में पूछते हैं? (1)
बड़ी ख़बर (क़ियामत) के बारे में, (2)
जिस में वह इख़्तिलाफ़ कर रहें हैं। (3)
हरगिज़ नहीं, अ़नक़रीब वह जान लेंगे, (4)
फिर हरगिज़ नहीं, अ़नक़रीब वह जान लेंगे। (5)
क्या हम ने ज़मीन को नहीं बनाया बिछौना (फ़र्श)? (6)
और पहाड़ों को कीलें, (7)
और हम ने तुम्हें जोड़े जोड़े पैदा किया, (8)
और तुम्हारे लिए नींद को बनाया आराम (राहत), (9)
और हम ने रात को ओढ़ना (पर्दा) बनाया, (10)
और हम ने दिन को कमाने का वक़्त बनाया। (11)
और हम ने बनाए तुम्हारे ऊपर सात मज़बूत (आस्मान), (12)
और हम ने चमकता हुआ चिराग़ (आफ़्ताब) बनाया, (13)
और हम ने पानी भरी बदलियों से उतारी मूसलाधार बारिश, (14)
ताकि हम उस से अनाज और सब्ज़ी निकालें, (15)
और पत्तों में लिपटे हुए (घने) बाग़। (16)
बेशक फ़ैसले का दिन एक मुक़र्रर वक़्त है, (17)
जिस दिन सूर फूंका जाएगा, फिर तुम गिरोह दर गिरोह चले आओगे, (18)
और आस्मान खोला जाएगा तो (उस में) दरवाज़े हो जाएंगे, (19)
और पहाड़ चलाए जाएंगे तो सराब हो जाएंगे। (20)
बेशक दोज़ख़ घात है। (21)
सरकशों का ठिकाना, (22)
और उस में रहेंगे मुद्दतों, (23)
न उस में ठन्डक (का मज़ा) चखेंगे न पीने की चीज़, (24)
मगर गर्म पानी और बहती पीप, (25)
(यह) पूरा पूरा बदला होगा। (26)
बेशक वह हिसाब की तवक़्क़ो न रखते थे, (27)

وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا كِذَّابًا ﴿٢٨﴾ وَكُلَّ شَيْءٍ اَحْصَيْنٰهُ كِتٰبًا ﴿٢٩﴾

29	लिख कर	हम ने गिन रखी है	और हर चीज़	28	झूट जान कर	हमारी आयतें	और झुटलाते थे

فَذُوْقُوْا فَلَنْ نَّزِيْدَكُمْ اِلَّا عَذَابًا ﴿٣٠﴾ اِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ مَفَازًا ﴿٣١﴾

31	कामयाबी	परहेज़गारों के लिए	बेशक	30	अज़ाब	मगर	बढ़ाते जाएंगे	हरगिज़ नहीं	अब मज़ा चखो

حَدَآئِقَ وَاَعْنَابًا ﴿٣٢﴾ وَّكَوَاعِبَ اَتْرَابًا ﴿٣٣﴾ وَّكَاْسًا دِهَاقًا ﴿٣٤﴾

34	छलकते हुए	और प्याले	33	हम उम्र	और नौजवान औरतें	32	और अंगूर	बाग़ात

لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّلَا كِذّٰبًا ﴿٣٥﴾ جَزَآءً مِّنْ رَّبِّكَ عَطَآءً

इन्आम	तुम्हारा रब	से	यह बदला	35	और न झूट (ख़ुराफ़ात)	बेहूदा	उस में	न सुनेंगे

حِسَابًا ﴿٣٦﴾ رَّبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمٰنِ

बहुत मेहरबान	और जो उन के दरमियान	और ज़मीन	आस्मानों	रब	36	हिसाब से (काफ़ी)

لَا يَمْلِكُوْنَ مِنْهُ خِطَابًا ﴿٣٧﴾ يَوْمَ يَقُوْمُ الرُّوْحُ وَالْمَلٰٓئِكَةُ

और फ़रिश्ते	खड़े होंगे रूह	दिन	37	बात करना	उस से	वह क़ुदरत नहीं रखते

صَفًّا ۙۛ لَّا يَتَكَلَّمُوْنَ اِلَّا مَنْ اَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَقَالَ صَوَابًا ﴿٣٨﴾

38	ठीक बात	और बोलेगा	रहमान	उस को	इजाज़त दी	जो-जिस	मगर	न बोल सकेंगे	सफ़ बान्धे

ذٰلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ ۚ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ مَاٰبًا ﴿٣٩﴾

39	ठिकाना	अपने रब के पास	बनाए	चाहे	पस जो	बरहक़	दिन	यह

اِنَّآ اَنْذَرْنٰكُمْ عَذَابًا قَرِيْبًا ۚ يَّوْمَ يَنْظُرُ الْمَرْءُ مَا

जो	आदमी	देख लेगा	जिस दिन	क़रीब के	अज़ाब	बेशक हम ने डरा दिया तुम्हें

قَدَّمَتْ يَدٰهُ وَيَقُوْلُ الْكٰفِرُ يٰلَيْتَنِيْ كُنْتُ تُرٰبًا ﴿٤٠﴾

40	मिट्टी	होता	काश मैं	काफ़िर	और कहेगा	आगे भेजा उस के हाथ

آيَاتُهَا ٤٦ ❀ سُوْرَةُ النّٰزِعٰتِ (٧٩) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकूआत 2 — (79) सूरतुन नाज़िआत — आयात 46

खींचने वाले

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وَالنّٰزِعٰتِ غَرْقًا ﴿١﴾ وَّالنّٰشِطٰتِ نَشْطًا ﴿٢﴾ وَّالسّٰبِحٰتِ سَبْحًا ﴿٣﴾

3	तेज़ी से	और तैरने वाले	2	खोल कर	और छुड़ाने वाले	1	डूब कर	क़सम है खींचने वाले

فَالسّٰبِقٰتِ سَبْقًا ﴿٤﴾ فَالْمُدَبِّرٰتِ اَمْرًا ﴿٥﴾ يَوْمَ تَرْجُفُ

وقف لازم

कांपे	दिन	5	हुक्म के मुताबिक़	फिर तदबीर करने वाले	4	दौड़ कर	फिर आगे बढ़ने वाले

الرَّاجِفَةُ ﴿٦﴾ تَتْبَعُهَا الرَّادِفَةُ ﴿٧﴾ قُلُوْبٌ يَّوْمَئِذٍ وَّاجِفَةٌ ﴿٨﴾

8	धड़कने वाले	उस दिन	कितने दिल	7	पीछे आने वाली	उस के पीछे आए	6	कांपने वाली

और हमारी आयतों को झुटलाते थे झूट जान कर। (28) और हम ने हर चीज़ गिन कर लिख रखी है, (29) अब मज़ा चखो, पस हम तुम पर हरगिज़ न बढ़ाते जाएंगे मगर अज़ाब। (30) बेशक परहेज़गारों के लिए कामयाबी है, (31) बाग़ात और अंगूर, (32) और नौजवान औरतें हम उम्र, (33) और छलकते हुए प्याले। (34) वह उस में न सुनेंगे कोई बेहूदा बात और न झूट (ख़ुराफ़ात)। (35) यह बदला है तुम्हारे रब का इन्आम हिसाब से (काफ़ी), (36) रब आस्मानों का और ज़मीन का और जो कुछ उन के दरमियान है, बहुत मेहरबान, वह उस से बात करने की क़ुदरत नहीं रखते। (37) जिस दिन रूह (जिब्रील (अ) और फ़रिश्ते सफ़ बान्धे खड़े होंगे, न बोल सकेंगे मगर जिस को रहमान ने इजाज़त दी और बोलेगा ठीक बात। (38) यह दिन बरहक़ है, पस जो कोई चाहे अपने रब के पास ठिकाना बनाए। (39) बेशक हम ने तुम्हें क़रीब आने वाले अज़ाब से डरा दिया है, जिस दिन आदमी देख लेगा जो उस के हाथों ने आगे भेजा, और काफ़िर कहेगा कि काश मैं मिट्टी होता। (40)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

क़सम है डूब कर खींचने वाले (फ़रिश्तों) की, (1) और खोल कर छुड़ाने वालों की, (2) और तेज़ी से तैरने वालों की, (3) फिर दौड़ कर आगे बढ़ने वालों की, (4) फिर हुक्म के मुताबिक़ तदबीर करने वालों की। (5) जिस दिन कांपने वाली कांपे, (6) और उस के पीछे आए पीछे आने वाली। (7) कितने दिल उस दिन धड़कते होंगे, (8)

وقف لازم اَبۡصَارُهَا خَاشِعَةٌ ﴿٩﴾ يَقُوۡلُوۡنَ ءَاِنَّا لَمَرۡدُوۡدُوۡنَ فِى الۡحَافِرَةِ ﴿١٠﴾

10	पहली हालत	में	लौटाए जाएंगे	क्या हम	वह कहते हैं	9	झुकी हुई	उन की निगाहें

وقف لازم ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا نَّخِرَةً ﴿١١﴾ قَالُوۡا تِلۡكَ اِذًا كَرَّةٌ خَاسِرَةٌ ﴿١٢﴾

12	ख़सारे वाली	वापसी	फिर	यह	वह बोले	11	खोखली	हड्डियां	हम होंगे	क्या जब

فَاِنَّمَا هِىَ زَجۡرَةٌ وَّاحِدَةٌ ﴿١٣﴾ فَاِذَا هُمۡ بِالسَّاهِرَةِ ﴿١٤﴾ هَلۡ اَتٰىكَ

पहुँची तेरे पास	क्या	14	मैदान में	वह	फिर उस वक़्त	13	एक	डांट	वह	फिर तो सिर्फ़

وقف لازم حَدِيۡثُ مُوۡسٰى ﴿١٥﴾ اِذۡ نَادٰىهُ رَبُّهٗ بِالۡوَادِ الۡمُقَدَّسِ طُوًى ﴿١٦﴾

16	तुवा	मुक़द्दस	वादी	उस का रब	जब पुकारा उसे	15	मूसा (अ)	बात

اِذۡهَبۡ اِلٰى فِرۡعَوۡنَ اِنَّهٗ طَغٰى ﴿١٧﴾ فَقُلۡ هَلۡ لَّكَ اِلٰٓى اَنۡ

कि	तरफ़	तुझ को	क्या	पस कहो	17	बेशक उस ने सरकशी की	फ़िरऔन	तरफ़, पास	जाओ

تَزَكّٰى ﴿١٨﴾ وَاَهۡدِيَكَ اِلٰى رَبِّكَ فَتَخۡشٰى ﴿١٩﴾ فَاَرٰىهُ الۡاٰيَةَ الۡكُبۡرٰى ﴿٢٠﴾

20	बड़ी निशानी	उस को दिखाई	19	कि तू डरे	तेरा रब	तरफ़	और तुझे राह दिखाऊँ	18	तू संवर जाए

فَكَذَّبَ وَعَصٰى ﴿٢١﴾ ثُمَّ اَدۡبَرَ يَسۡعٰى ﴿٢٢﴾ فَحَشَرَ

फिर जमा किया	22	जी तोड़ कोशिश किया	फिर पीठ फेर लिया	21	और नाफ़रमानी की	उस ने झुटलाया

فَنَادٰى ﴿٢٣﴾ فَقَالَ اَنَا رَبُّكُمُ الۡاَعۡلٰى ﴿٢٤﴾ فَاَخَذَهُ اللّٰهُ نَكَالَ

सज़ा	तो उस को पकड़ा अल्लाह ने	24	तुम्हारा रब सब से बड़ा	मैं	फिर उस ने कहा	23	फिर पुकारा

ع ٢٦ ٣ الۡاٰخِرَةِ وَالۡاُوۡلٰى ﴿٢٥﴾ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَعِبۡرَةً لِّمَنۡ يَّخۡشٰى ﴿٢٦﴾ ءَاَنۡتُمۡ

क्या तुम	26	डरे	उस के लिए जो	इब्रत	इस	में	बेशक	25	और दुनिया	आख़िरत

اَشَدُّ خَلۡقًا اَمِ السَّمَآءُ ؕ بَنٰىهَا ﴿٢٧﴾ رَفَعَ سَمۡكَهَا فَسَوّٰىهَا ﴿٢٨﴾

28	फिर उस को दुरुस्त किया	उस की छत	बुलन्द किया	27	उस ने बनाया	आसमान	या	बनाना	ज़ियादा मुश्किल

وَاَغۡطَشَ لَيۡلَهَا وَاَخۡرَجَ ضُحٰىهَا ﴿٢٩﴾ وَالۡاَرۡضَ بَعۡدَ ذٰلِكَ

उस	बाद	और ज़मीन	29	दिन की रोशनी	और निकाली	उस की रात	तारीक कर दिया

دَحٰىهَا ﴿٣٠﴾ اَخۡرَجَ مِنۡهَا مَآءَهَا وَمَرۡعٰىهَا ﴿٣١﴾ وَالۡجِبَالَ اَرۡسٰىهَا ﴿٣٢﴾

32	क़ाइम किया उस को	और पहाड़	31	और उस का चारा	उस का पानी	उस से	निकाला	30	उस को बिछाया

مَتَاعًا لَّكُمۡ وَلِاَنۡعَامِكُمۡ ﴿٣٣﴾ فَاِذَا جَآءَتِ الطَّآمَّةُ الۡكُبۡرٰى ﴿٣٤﴾

34	बड़ा	हंगामा	वह आए	फिर जब	33	और तुम्हारे चौपायों के लिए	तुम्हारे लिए	फ़ाइदा

يَوۡمَ يَتَذَكَّرُ الۡاِنۡسَانُ مَا سَعٰى ﴿٣٥﴾ وَبُرِّزَتِ الۡجَحِيۡمُ

जहन्नम	ज़ाहिर कर दी जाएगी	35	उस ने कमाया	जो	इन्सान	याद करेगा	दिन

لِمَنۡ يَّرٰى ﴿٣٦﴾ فَاَمَّا مَنۡ طَغٰى ﴿٣٧﴾ وَاٰثَرَ الۡحَيٰوةَ الدُّنۡيَا ﴿٣٨﴾

38	दुनिया	ज़िन्दगी	तरजीह दी	37	सरकशी की	जो - जिस	पस	36	देखे	उस के लिए जो

उन की निगाहें झुकी हुई। (9)
वह कहते हैं: क्या हम पहली हालत
में लौटाए जाएंगे? (10)
क्या जब हम खोखली हड्डियां
हो चुके होंगे? (11)
वह बोले कि यह फिर ख़सारे वाली
वापसी है। (12)
फिर वह तो सिर्फ़ एक डांट है। (13)
फिर वह उस वक़्त मैदान में
(मौजूद होंगे)। (14)
क्या तुम्हारे पास मूसा (अ) की बात
पहुँची? (15)
जब उस को उस के रब ने पुकारा
तुवा के मुक़द्दस वादी में। (16)
के फ़िरऔन के पास जाओ, बेशक
उस ने सरकशी की है, (17)
पस कहो: क्या तुझ को (ख़ाहिश है)
कि तू संवर जाए, (18)
और मैं तुझे तेरे रब की तरफ़ राह
दिखाऊँ कि तू डरे। (19)
(मूसा अ ने) उस को दिखाई बड़ी
निशानी। (20)
उस ने झुटलाया और नाफ़रमानी
की, (21)
फिर पीठ फेर कर (हक़ के ख़िलाफ़)
जी तोड़ कोशिश किया। (22)
फिर (लोगों को) जमा किया, फिर
पुकारा। (23)
फिर कहा कि मैं तुम्हारा सब से
बड़ा रब हूँ। (24)
तो अल्लाह ने उस को दुनिया और
आख़िरत की सज़ा में पकड़ा। (25)
बेशक इस में उस के लिए इब्रत
है जो डरे। (26)
क्या तुम्हारा बनाना ज़ियादा
मुश्किल है या आस्मान का, उस
ने उस को बनाया। (27)
उस की छत को बुलन्द किया फिर
उस को दुरुस्त किया, (28)
और उस की रात को तारीक कर दिया
और निकाली दिन की रोशनी, (29)
और उस के बाद ज़मीन को
बिछाया। (30)
उस से उस का पानी निकाला और
उस का चारा। (31)
और पहाड़ों को क़ाइम किया। (32)
तुम्हारे और तुम्हारे चौपायों के
फ़ाइदे के लिए। (33)
फिर जब बड़ा हंगामा आएगा
(क़ियामत), (34)
उस दिन इन्सान याद करेगा जो उस
ने कमाया (अपने आमाल)। (35)
और जहन्नम हर उस के लिए
ज़ाहिर कर दी जाएगी जो देखे। (36)
पस जिस ने सरकशी की। (37)
और दुनिया की ज़िन्दगी को तरजीह
दी। (38)

فَاِنَّ الْجَحِيْمَ هِيَ الْمَاْوٰى ﴿٣٩﴾ وَاَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ

अपने रब	खड़ा होना	डरा	जो	और जो	39	ठिकाना	वह	जहन्नम	तो यक़ीनन

وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰى ﴿٤٠﴾ فَاِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَاْوٰى ﴿٤١﴾

41	ठिकाना	वह	जन्नत	यक़ीनन	40	ख़्वाहिश	से	जी, दिल	और रोका

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ مُرْسٰىهَا ﴿٤٢﴾ فِيْمَ اَنْتَ مِنْ ذِكْرٰىهَا ﴿٤٣﴾

43	उस का ज़िक्र	से	तू	क्या	42	उस का ठहरना (क़ियाम)	कब	क़ियामत	से (बाबत)	वह आप (स) से पूछते हैं

اِلٰى رَبِّكَ مُنْتَهٰىهَا ﴿٤٤﴾ اِنَّمَآ اَنْتَ مُنْذِرُ مَنْ يَّخْشٰىهَا ﴿٤٥﴾

45	उस से डरे	जो	डराने वाले	आप (स)	सिर्फ़	44	उस की इन्तिहा	तुम्हारा रब	तरफ़

كَاَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا عَشِيَّةً اَوْ ضُحٰىهَا ﴿٤٦﴾ ع

46	उस की सुबह	या	एक शाम	मगर	ठहरे वह	नहीं	देखेंगे उस को	दिन	गोया वह

اٰيَاتُهَا ٤٢ ❀ سُوْرَةُ عَبَسَ (٨٠) ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ 1 — (80) सूरह अ़बासा / तेवरी चढ़ाई — आयात 42

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

عَبَسَ وَتَوَلّٰىٓ ﴿١﴾ اَنْ جَآءَهُ الْاَعْمٰى ﴿٢﴾ وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّهٗ

शायद वह	ख़बर आप (स) को	और क्या	2	एक अंधा	आया उस के पास	कि	1	और मुँह मोड़ लिया	तेवरी चढ़ाई

يَزَّكّٰىٓ ﴿٣﴾ اَوْ يَذَّكَّرُ فَتَنْفَعَهُ الذِّكْرٰى ﴿٤﴾ اَمَّا مَنِ اسْتَغْنٰى ﴿٥﴾

5	बेपरवाई की	जिस	जो	4	नसीहत करना	उसे नफ़ा पहुँचाता	नसीहत मानता	या	3	संवर जाता

فَاَنْتَ لَهٗ تَصَدّٰى ﴿٦﴾ وَمَا عَلَيْكَ اَلَّا يَزَّكّٰى ﴿٧﴾ وَاَمَّا مَنْ

जो	और जो	7	वह संवरे	अगर न	आप (स) पर	और नहीं	6	फ़िक्र करते हैं	उस के लिए	तो आप (स)

جَآءَكَ يَسْعٰى ﴿٨﴾ وَهُوَ يَخْشٰى ﴿٩﴾ فَاَنْتَ عَنْهُ تَلَهّٰى ﴿١٠﴾ كَلَّآ

हरगिज़ नहीं	10	तग़ाफ़ुल करते हैं	उस से	तो आप	9	डरता है	और वह	8	दौड़ता	आया आप के पास

اِنَّهَا تَذْكِرَةٌ ﴿١١﴾ فَمَنْ شَآءَ ذَكَرَهٗ ﴿١٢﴾ فِيْ صُحُفٍ مُّكَرَّمَةٍ ﴿١٣﴾ وقف لازم

13	बाइज़्ज़त	सहीफ़े (औराक़)	में	12	इस से नसीहत क़ुबूल करे	चाहे	सो जो	11	नसीहत	यह तो

مَّرْفُوْعَةٍ مُّطَهَّرَةٍ ﴿١٤﴾ بِاَيْدِيْ سَفَرَةٍ ﴿١٥﴾ كِرَامٍ بَرَرَةٍ ﴿١٦﴾

16	नेकोकार	बुज़ुर्ग	15	लिखने वाले	हाथों में	14	इन्तिहाई पाकीज़ा	बुलन्द मरतबा

قُتِلَ الْاِنْسَانُ مَآ اَكْفَرَهٗ ﴿١٧﴾ مِنْ اَيِّ شَيْءٍ خَلَقَهٗ ﴿١٨﴾

18	उसे पैदा किया	चीज़	किस	से	17	कैसा नाशुक्रा	इन्सान	मारा जाए

مِنْ نُّطْفَةٍ خَلَقَهٗ فَقَدَّرَهٗ ﴿١٩﴾ ثُمَّ السَّبِيْلَ يَسَّرَهٗ ﴿٢٠﴾

20	उस को आसान कर दिया	राह	फिर	19	फिर उसकी तक़दीर मुक़र्रर की	उसको पैदा किया	नुत्फ़ा	से

तो यक़ीनन उस का ठिकाना जहन्नम है। (39) और जो अपने रब (के सामने) खड़ा होने से डरा और उस ने रोका अपने दिल को ख़्वाहिश से, (40) तो यक़ीनन उस का ठिकाना जन्नत है। (41) वह आप (स) से पूछते हैं क़ियामत के बाबत कि कब (होगा) उस का क़ियाम? (42) तुम्हें क्या काम उस के ज़िक्र से? (43) तुम्हारे रब की तरफ़ है उस की इन्तिहा। (44) आप (स) सिर्फ़ डराने वाले हैं उस को जो उस से डरे। (45) गोया वह जिस दिन उस को देखेंगे (ऐसा लगेगा कि) वह नहीं ठहरे मगर एक शाम या उस की एक सुबह। (46)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

तेवरी चढ़ाई और मुँह मोड़ लिया, (1) कि उस के पास एक अंधा आया। (2) और आप (स) को क्या ख़बर कि शायद वह संवर जाता, (3) या नसीहत मान जाता कि नसीहत करना उसे नफ़ा पहुँचाता। (4) और जिस ने बेपरवाई की। (5) आप (स) उस के लिए फ़िक्र करते हैं। (6) और आप (स) पर (कोई इल्ज़ाम) नहीं अगर वह न संवरे। (7) और जो आप (स) के पास दौड़ता हुआ आया, (8) और वह डरता है, (9) तो आप (स) उस से तग़ाफ़ुल करते हैं। (10) हरगिज़ नहीं, यह तो (किताबे) नसीहत है। (11) सो जो चाहे इस से नसीहत क़ुबूल करे। (12) बाइज़्ज़त औराक़ में, (13) बुलन्द मरतबा, इन्तिहाई पाकीज़ा, (14) लिखने वाले हाथों में, (15) बुज़ुर्ग नेकोकार। (16) इन्सान मारा जाए कि कैसा नाशुक्रा है। (17) उस (अल्लाह) ने उसे किस चीज़ से पैदा किया? (18) एक नुत्फ़े से उस को पैदा किया, फिर उस की तक़दीर मुक़र्रर की, (19) फिर उस की राह आसान कर दी, (20)

ثُمَّ اَمَاتَهٗ فَاَقْبَرَهٗ ﴿٢١﴾ ثُمَّ اِذَا شَآءَ اَنْشَرَهٗ ﴿٢٢﴾ كَلَّا لَمَّا يَقْضِ مَآ

फिर	उसे मुर्दा किया	फिर उसे क़ब्र में पहुंचाया	21	फिर	जब	चाहा	उसे निकाला	22	हरगिज़ नहीं	अभी तक	पूरा किया	जो

اَمَرَهٗ ﴿٢٣﴾ فَلْيَنْظُرِ الْاِنْسَانُ اِلٰى طَعَامِهٖ ﴿٢٤﴾ اَنَّا صَبَبْنَا الْمَآءَ

उस को हुक्म दिया	23	पस चाहिए कि देखे	इन्सान	तरफ़ (को)	अपना खाना	24	कि हम	ऊपर से डाला	पानी

صَبًّا ﴿٢٥﴾ ثُمَّ شَقَقْنَا الْاَرْضَ شَقًّا ﴿٢٦﴾ فَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا حَبًّا ﴿٢٧﴾

गिरता हुआ	25	फिर	फाड़ा (चीरा)	ज़मीन	फाड़ कर	26	फिर हम ने उगाया	उस में	ग़ल्ला	27

وَّعِنَبًا وَّقَضْبًا ﴿٢٨﴾ وَّزَيْتُوْنًا وَّنَخْلًا ﴿٢٩﴾ وَّحَدَآئِقَ غُلْبًا ﴿٣٠﴾ وَّفَاكِهَةً

और अंगूर	और तरकारी	28	और ज़ैतून	और खजूर	29	और बाग़ात	घने	30	मेवा

وَّاَبًّا ﴿٣١﴾ مَّتَاعًا لَّكُمْ وَلِاَنْعَامِكُمْ ﴿٣٢﴾ فَاِذَا جَآءَتِ الصَّآخَّةُ ﴿٣٣﴾

और चारा	31	सामान (खाना)	तुम्हारे लिए	और तुम्हारे चौपायों के लिए	32	फिर जब	आए	कान फोड़ने वाली	33

يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ اَخِيْهِ ﴿٣٤﴾ وَاُمِّهٖ وَاَبِيْهِ ﴿٣٥﴾ وَصَاحِبَتِهٖ

जिस दिन	भागेगा	आदमी	से	अपना भाई	34	और अपनी माँ	और अपना बाप	35	और अपनी बीवी

وَبَنِيْهِ ﴿٣٦﴾ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَاْنٌ يُّغْنِيْهِ ﴿٣٧﴾

और अपने बेटे	36	वास्ते हर एक	आदमी	उन से	उस दिन	हालत (फ़िक्र)	उसे काफ़ी होगी	37

وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ مُّسْفِرَةٌ ﴿٣٨﴾ ضَاحِكَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ ﴿٣٩﴾ وَوُجُوْهٌ

बहुत चेहरे	उस दिन	चमकते	38	हँसते	खुशियां मनाते	39	और बहुत चेहरे

يَّوْمَئِذٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ ﴿٤٠﴾ تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ ﴿٤١﴾ اُولٰٓئِكَ هُمُ

उस दिन	उन पर	गुबार	40	छाई हुई	सियाही	41	यही लोग	वह

ع ١ ٤٢ ٥ الْكَفَرَةُ الْفَجَرَةُ ﴿٤٢﴾

काफ़िर	गुनाहगार	42

آيَاتُهَا ٢٩ ❀ (٨١) سُوْرَةُ التَّكْوِيْرِ ❀ رُكُوْعُهَا ١

आयात 29 | (81) सूरतुत तकवीर लपेटना | रुकूअ 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ﴿١﴾ وَاِذَا النُّجُوْمُ انْكَدَرَتْ ﴿٢﴾ وَاِذَا الْجِبَالُ

जब	सूरज	लपेट दिया जाएगा	1	और जब	सितारे	मांद पड़ जाएंगे	2	और जब	पहाड़

سُيِّرَتْ ﴿٣﴾ وَاِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ ﴿٤﴾ وَاِذَا الْوُحُوْشُ

चलाए जाएंगे	3	और जब	दस माह की गाभन ऊँटनियां	छुटी फिरेंगी	4	और जब	वह्शी जानवर

حُشِرَتْ ﴿٥﴾ وَاِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ ﴿٦﴾ وَاِذَا النُّفُوْسُ زُوِّجَتْ ﴿٧﴾

इकटठे किए जाएंगे	5	और जब	दर्या	भड़काए जाएंगे	6	और जब	जानें	जोड़दी जाएंगी	7

फिर उस को मुर्दा किया, फिर उसे क़ब्र में पहुंचाया। (21) फिर जब चाहा उसे दोबारा उठा खड़ा करे, (22) उस ने हरगिज़ पूरा न किया जो (अल्लाह ने) उस को हुक्म दिया। (23) पस चाहिए कि इन्सान देख ले अपने खाने को, (24) हम ने ऊपर से गिरता हुआ पानी डाला, (25) फिर ज़मीन को फाड़ कर चीरा, (26) फिर हम ने उस में उगाया ग़ल्ला, (27) और अंगूर और तरकारी। (28) और ज़ैतून और खजूर। (29) और बाग़ात घने, (30) और मेवा और चारा, (31) खोराक तुम्हारे और तुम्हारे चौपायों के लिए। (32) फिर जब आए कान फोड़ने वाली। (33) उस दिन भागेगा आदमी अपने भाई से, (34) और अपनी माँ और अपने बाप, (35) और अपनी बीवी और अपने बेटे से। (36) उस दिन उन में से हर एक आदमी को (अपनी) फ़िक्र दूसरो से बेपरवा कर देगी। (37) उस दिन बहुत से चेहरे चमकते होंगे, (38) हँसते और खुशियां मनाते। (39) और उस दिन बहुत से चेहरों पर गुबार होगा। (40) सियाही छाई हुई (होगी)। (41) यही लोग हैं काफ़िर गुनाहगार। (42)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

जब सूरज लपेट दिया जाएगा, (1) और जब सितारे मांद पड़ जाएंगे, (2) और जब पहाड़ चलाए जाएंगे, (3) और जब दस माह की गाभन ऊँटनियां छुटी फिरेंगी, (4) और जब वह्शी जानवर इकटठे किए जाएंगे, (5) और जब दर्या भड़काए जाएंगे, (6) और जब जानें (जिस्मों से) जोड़दी जाएंगी, (7)

और जब ज़िन्दा गाड़ी हुई (ज़िन्दा दरगोर) लड़की से पूछा जाएगा। (8)
वह किस गुनाह में मारी गई? (9)
और जब आमाल नामे खोले जाएंगे, (10)
और जब आस्मान की खाल खींच ली जाएगी, (11)
और जब जहन्नम भड़काई जाएगी, (12)
और जब जन्नत क़रीब लाई जाएगी, (13)
हर शख़्स जान लेगा जो कुछ वह लाया है। (14)
सो मैं क़सम खाता हूँ (सितारे की) पीछे हट जाने वाले, (15)
सीधे चलने वाले, छुप जाने वाले, (16)
और रात की जब वह फैल जाए, (17)
और सुबह की जब वह दम भरे (नमूदार हो), (18)
बेशक यह (कुरआन) कलाम है इज़्ज़त वाले क़ासिद (फ़रिश्ते) का, (19)
कुव्वत वाला, अर्श के मालिक के नज़्दीक बुलन्द मरतबा। (20)
सब उस की इताअत करते हैं, फिर अमानतदार है। (21)
और तुम्हारे रफ़ीक़ (मुहम्मद स) कुछ दीवाने नहीं, (22)
और उस (मुहम्मद स) ने उस (फ़रिश्ते) को खुले (आस्मान) के किनारे पर देखा। (23)
और वह (स) ग़ैब पर बुख़्ल करने वाले नहीं। (24)
और यह (कुरआन) शैतान मर्दूद का कहा हुआ नहीं, (25)
फिर तुम किधर जा रहे हो? (26)
यह नहीं है मगर (किताबे) नसीहत तमाम जहानों के लिए, (27)
तुम में से जो भी चाहे कि सीधा रास्ता चले। (28)
और तुम न चाहोगे मगर यह कि अल्लाह चाहे तमाम जहानों का रब। (29)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

जब आस्मान फट जाएगा, (1)
और जब सितारे झड़ पड़ेंगे, (2)
और जब दर्या उबल पड़ेंगे, (3)
और जब क़ब्रें कुरेदी जाएंगी, (4)
हर शख़्स जान लेगा कि उस ने आगे क्या भेजा और पीछे (क्या) छोड़ा? (5)

وَاِذَا الْمَوْءٗدَةُ سُئِلَتْ ﴿٨﴾ بِاَيِّ ذَنْۢبٍ قُتِلَتْ ﴿٩﴾ وَاِذَا الصُّحُفُ

आमाल नामे	और जब	9	मारी गई	गुनाह	किस	8	पूछा जाएगा	ज़िन्दा गाड़ी हुई लड़की	और जब

نُشِرَتْ ﴿١٠﴾ وَاِذَا السَّمَآءُ كُشِطَتْ ﴿١١﴾ وَاِذَا الْجَحِيْمُ سُعِّرَتْ ﴿١٢﴾

12	भड़काई जाएगी	जहन्नम	और जब	11	खाल खींच ली जाएगी	आस्मान	और जब	10	खोले जाएंगे

وَاِذَا الْجَنَّةُ اُزْلِفَتْ ﴿١٣﴾ عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّآ اَحْضَرَتْ ﴿١٤﴾

14	वह लाया	जो कुछ	हर शख़्स	जान लेगा	13	क़रीब लाई जाएगी	जन्नत	और जब

فَلَآ اُقْسِمُ بِالْخُنَّسِ ﴿١٥﴾ الْجَوَارِ الْكُنَّسِ ﴿١٦﴾ وَالَّيْلِ اِذَا عَسْعَسَ ﴿١٧﴾

17	फैल जाए	जब	और रात	16	छुप जाने वाले	सीधे चलने वाले	15	पीछे हट जाने वाले	सो मैं क़सम खाता हूँ

وَالصُّبْحِ اِذَا تَنَفَّسَ ﴿١٨﴾ اِنَّهٗ لَقَوْلُ رَسُوْلٍ كَرِيْمٍ ﴿١٩﴾ ذِىْ قُوَّةٍ

कुव्वत वाला	19	इज़्ज़त वाला	क़ासिद	कलाम	बेशक यह	18	दम भरे	जब	और सुबह

عِنْدَ ذِى الْعَرْشِ مَكِيْنٍ ﴿٢٠﴾ مُّطَاعٍ ثَمَّ اَمِيْنٍ ﴿٢١﴾

21	वहां का अमानतदार	सब का माना हुआ	20	बुलन्द मरतबा	अर्श के मालिक	नज़्दीक

وَمَا صَاحِبُكُمْ بِمَجْنُوْنٍ ﴿٢٢﴾ وَلَقَدْ رَاٰهُ بِالْاُفُقِ الْمُبِيْنِ ﴿٢٣﴾

23	खुला	उफुक़ (किनारे) पर	और उस ने उस को देखा है	22	दीवाना	तुम्हारा रफ़ीक़	और नहीं

وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِيْنٍ ﴿٢٤﴾ وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطٰنٍ

शैतान	कहा हुआ	और नहीं	24	बुख़्ल करने वाला	ग़ैब पर	और नहीं वह

رَّجِيْمٍ ﴿٢٥﴾ فَاَيْنَ تَذْهَبُوْنَ ﴿٢٦﴾ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٧﴾

27	तमाम जहानों के लिए	नसीहत	मगर	नहीं यह	26	तुम जा रहे हो	फिर किधर	25	मर्दूद

لِمَنْ شَآءَ مِنْكُمْ اَنْ يَّسْتَقِيْمَ ﴿٢٨﴾ وَمَا تَشَآءُوْنَ اِلَّآ

मगर	और तुम न चाहोगे	28	सीधा चले	कि	तुम से	चाहे	लिए-जो

اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٩﴾ ع ١ ٢٩ ٦

29	तमाम जहान	रब	अल्लाह	चाहे	यह कि

اٰيَاتُهَا ١٩ ❀ سُوْرَةُ الْاِنْفِطَارِ (٨٢) ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ 1 — (82) सूरतुल इंफ़ितार — फट जाना — आयात 19

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اِذَا السَّمَآءُ انْفَطَرَتْ ﴿١﴾ وَاِذَا الْكَوَاكِبُ انْتَثَرَتْ ﴿٢﴾ وَاِذَا الْبِحَارُ

दर्या	और जब	2	झड़ पड़ेंगे	सितारे	और जब	1	फट जाएगा	आस्मान	जब

فُجِّرَتْ ﴿٣﴾ وَاِذَا الْقُبُوْرُ بُعْثِرَتْ ﴿٤﴾ عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ وَاَخَّرَتْ ﴿٥﴾

5	और पीछे छोड़ा	उस ने आगे भेजा	क्या	हर शख़्स	जान लेगा	4	कुरेदी जाएगी	क़ब्रें	और जब	3	उबल पड़ेंगे (बह निकलेंगे)

يٰۤاَيُّهَا الْاِنْسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيْمِ ۙ﴿٦﴾ الَّذِيْ خَلَقَكَ

तुझे पैदा किया	जिस ने	6	करीम	अपने रब से	किस चीज़ ने तुझे धोका दिया	इन्सान	ऐ

فَسَوّٰىكَ فَعَدَلَكَ ۙ﴿٧﴾ فِيْۤ اَيِّ صُوْرَةٍ مَّا شَآءَ رَكَّبَكَ ؕ﴿٨﴾ كَلَّا بَلْ

हरगिज़ नहीं बल्कि	8	तुझे जोड़ दिया	चाहा	जिस सूरत	में	7	फिर बराबर किया	फिर तुझे ठीक किया

تُكَذِّبُوْنَ بِالدِّيْنِ ۙ﴿٩﴾ وَاِنَّ عَلَيْكُمْ لَحٰفِظِيْنَ ۙ﴿١٠﴾ كِرَامًا كٰتِبِيْنَ ۙ﴿١١﴾

11	लिखने वाले	इज़्ज़त वाले	10	निगहबान	तुम पर	और बेशक	9	जज़ा ओ सज़ा का दिन	तुम झुटलाते हो

يَعْلَمُوْنَ مَا تَفْعَلُوْنَ ﴿١٢﴾ اِنَّ الْاَبْرَارَ لَفِيْ نَعِيْمٍ ۙ﴿١٣﴾ وَّاِنَّ

और बेशक	13	जन्नत	में	नेक लोग	बेशक	12	जो तुम करते हो	वह जानते हैं

الْفُجَّارَ لَفِيْ جَحِيْمٍ ۙ﴿١٤﴾ يَّصْلَوْنَهَا يَوْمَ الدِّيْنِ ﴿١٥﴾ وَمَا هُمْ

और वह नहीं	15	रोज़े जज़ा ओ सज़ा (क़ियामत)	डाले जाएंगे उस में	14	जहन्नम	में	गुनाहगार

عَنْهَا بِغَآئِبِيْنَ ؕ﴿١٦﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الدِّيْنِ ۙ﴿١٧﴾ ثُمَّ مَآ

क्या	फिर	17	रोज़े जज़ा ओ सज़ा	क्या	और तुम्हें क्या ख़बर	16	ग़ाइब होने वाले	उस से

اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الدِّيْنِ ؕ﴿١٨﴾ يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِّنَفْسٍ

किसी शख़्स के लिए	कोई शख़्स	मालिक न होगा	जिस दिन	18	रोज़े जज़ा ओ सज़ा	क्या	तुम्हें ख़बर

ع ١٩ شَيْـًٔا ؕ وَالْاَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِّلّٰهِ ﴿١٩﴾

	19	अल्लाह के लिए	उस दिन	और हुक्म	कुछ	

آيَاتُهَا ٣٦ ❀ سُوْرَةُ الْمُطَفِّفِيْنَ (٨٣) ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ 1 — (83) सूरतुल मुतफ़्फ़िफ़ीन — आयात 36

नाप तौल में कमी करने वाले

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِيْنَ ۙ﴿١﴾ الَّذِيْنَ اِذَا اكْتَالُوْا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُوْنَ ؗ﴿٢﴾

2	पूरा भरलें	लोग	पर (से)	जब माप कर लें	वह जो कि	1	कमी करने वालों के लिए	ख़राबी

وَاِذَا كَالُوْهُمْ اَوْ وَّزَنُوْهُمْ يُخْسِرُوْنَ ؕ﴿٣﴾ اَلَا يَظُنُّ اُولٰٓئِكَ اَنَّهُمْ

कि वह	यह लोग	ख़याल करते	क्या नहीं	3	घटा कर दें	तोल कर दें	या	माप कर दें वह	और जब

مَّبْعُوْثُوْنَ ۙ﴿٤﴾ لِيَوْمٍ عَظِيْمٍ ۙ﴿٥﴾ يَّوْمَ يَقُوْمُ النَّاسُ لِرَبِّ

रब के सामने	लोग	खड़े होंगे	दिन	5	बड़ा	एक दिन	4	उठाए जाने वाले हैं

الْعٰلَمِيْنَ ؕ﴿٦﴾ كَلَّآ اِنَّ كِتٰبَ الْفُجَّارِ لَفِيْ سِجِّيْنٍ ؕ﴿٧﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ

ख़बर है तुझे	और क्या	7	सिज्जीन	अलबत्ता में	बदकार	आमाल नामा	हरगिज़ नहीं, बेशक	6	तमाम जहान

مَا سِجِّيْنٌ ؕ﴿٨﴾ كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ ؕ﴿٩﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۙ﴿١٠﴾

10	झुटलाने वालों के लिए	उस दिन	ख़राबी	9	लिखी हुई	एक किताब	8	क्या है सिज्जीन

ऐ इन्सान तुझे अपने रब्बे करीम के बारे में किस चीज़ ने धोका दिया। (6)
जिस ने तुझे पैदा किया, फिर ठीक किया, फिर बराबर किया, (7)
जिस सूरत में चाहा तुझे जोड़ दिया। (8)
हरगिज़ नहीं, बल्कि तुम जज़ा ओ सज़ा के दिन (क़ियामत) को झुटलाते हो, (9)
और बेशक तुम पर निगहबान (मुक़र्रर) हैं, (10)
इज़्ज़त वाले, (आमाल) लिखने वाले। (11)
जो तुम करते हो वह जानते हैं। (12)
बेशक नेक लोग जन्नत में होंगे। (13)
और बेशक गुनाहगार जहन्नम में होंगे। (14)
उस में जज़ा ओ सज़ा (क़ियामत) के दिन डाले जाएंगे। (15)
और वह उस से ग़ाइब न हो सकेंगे। (16)
और तुम्हें क्या ख़बर कि रोज़े जज़ा ओ सज़ा क्या है? (17)
फिर तुम्हें क्या ख़बर कि रोज़े जज़ा ओ सज़ा क्या है? (18)
जिस दिन कुछ नहीं कर सकेगा कोई शख़्स किसी शख़्स के लिए, उस दिन हुक्म अल्लाह ही का होगा। (19)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

ख़राबी है कमी करने वालों के लिए, (1)
जो (लोगों से) माप कर लें तो पूरा भर कर लें, (2)
और जब (दूसरों को) माप कर या तोल कर दें तो घटा कर दें। (3)
क्या यह लोग ख़याल नहीं करते कि वह उठाए जाने वाले हैं। (4)
एक बड़े दिन, (5)
जिस दिन लोग खड़े होंगे तमाम जहानों के रब के सामने। (6)
हरगिज़ नहीं, बेशक बदकारों का आमाल नामा सिज्जीन में है। (7)
और तुझे क्या ख़बर कि सिज्जीन क्या है? (8)
एक लिखी हुई किताब। (9)
उस दिन ख़राबी है झुटलाने वालों के लिए, (10)

जो लोग झुटलाते हैं रोज़े जज़ा ओ सज़ा को। (11) और उसे नहीं झुटलाता मगर हद से बढ़ जाने वाला गुनाहगार, (12) जब पढ़ी जाती हैं उस पर हमारी आयतें तो कहे: यह पहलों की कहानियां हैं। (13) हरगिज़ नहीं, बल्कि ज़ंग पकड़ गया है उन के दिलों पर (उस के सबब) जो वह कमाते थे। (14) हरगिज़ नहीं, वह उस दिन अपने रब की दीद से रोक दिए जाएंगे। (15) फिर बेशक वह जहन्नम में दाख़िल होने वाले हैं। (16) फिर कहा जाएगा कि यह वही है जिस को तुम झुटलाते थे। (17) हरगिज़ नहीं, बेशक नेक लोगों का आमाल नामा "इल्लियीन" में है। (18) और तुझे क्या ख़बर कि इल्लियोन क्या है? (19) एक किताब है लिखी हुई। (20) (उसे) देखते हैं (अल्लाह के) मुक़र्रब (नज़्दीक वाले)। (21) बेशक नेक बन्दे नेमतों में होंगे। (22) तख़्तों (मुसन्दों) पर (बैठे) देखते होंगे, (23) तू उन के चेहरों पर नेमत की तरोताज़गी पाएगा। (24) उन्हें पिलाई जाती है ख़ालिस शराब मुहर बन्द, (25) उस की मुहर मुश्क पर जमी हुई (से लगी हुई), और चाहिए कि बाज़ी ले जाने की तमन्ना रखने वाले इस में बाज़ी ले जाने की कोशिश करें। (26) और उस में मिलावट है तस्नीम की, (27) यह एक चश्मा है जिस से मुक़र्रब पीते हैं। (28) बेशक जिन लोगों ने जुर्म किया (गुनाहगार) वह मोमिनों पर हँसते थे। (29) और जब उन से हो कर गुज़रते तो आँख मारते। (30) और जब अपने घर वालों की तरफ़ लौटते तो हँसते (बातें बनाते) लौटते। (31) और जब उन्हें देखते तो कहते: बेशक यह लोग गुमराह हैं, (32) और वह उन पर निगहबान बना कर नहीं भेजे गए। (33)

الَّذِيْنَ يُكَذِّبُوْنَ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ﴿١١﴾ وَمَا يُكَذِّبُ بِهٖۤ اِلَّا كُلُّ

हर	मगर	उस को	और नहीं झुटलाता	11	रोज़े जज़ा ओ सज़ा को	झुटलाते हैं	जो लोग

مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ ﴿١٢﴾ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا قَالَ اَسَاطِيْرُ

कहानियां	कहे	हमारी आयतें	उस पर	पढ़ी जाती	जब	12	गुनाहगार	हद से बढ़ जाने वाला

الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٣﴾ كَلَّا بَلْ ۜ رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٤﴾

14	वह कमाते थे	जो	ज़ंग पकड़ गया है उन के दिल पर	बल्कि	हरगिज़ नहीं	13	पहलों

كَلَّاۤ اِنَّهُمْ عَنْ رَّبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّمَحْجُوْبُوْنَ ﴿١٥﴾ ثُمَّ اِنَّهُمْ

बेशक वह	फिर	15	देखने से महरूम रखे जाएंगे	उस दिन	अपना रब	से	बेशक वह	हरगिज़ नहीं

لَصَالُوا الْجَحِيْمِ ﴿١٦﴾ ثُمَّ يُقَالُ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ﴿١٧﴾

17	झुटलाते	उस को	तुम थे	वह जो कि	यह	कहा जाएगा	फिर	16	जहन्नम	दाख़िल होने वाले

كَلَّاۤ اِنَّ كِتٰبَ الْاَبْرَارِ لَفِيْ عِلِّيِّيْنَ ﴿١٨﴾ وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا عِلِّيُّوْنَ ﴿١٩﴾

19	क्या इल्लियोन	तुझे ख़बर	और क्या	18	इल्लियीन	अलबत्ता में	नेक लोग	आमाल नामा	हरगिज़ नहीं बेशक

كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ ﴿٢٠﴾ يَّشْهَدُهُ الْمُقَرَّبُوْنَ ﴿٢١﴾ اِنَّ الْاَبْرَارَ لَفِيْ نَعِيْمٍ ﴿٢٢﴾

22	अल्बत्ता नेमत (आराम) में	नेक बन्दे	बेशक	21	नज़्दीक वाले	देखते हैं	20	लिखी हुई	एक किताब

عَلَى الْاَرَآئِكِ يَنْظُرُوْنَ ﴿٢٣﴾ تَعْرِفُ فِيْ وُجُوْهِهِمْ

उन के चेहरे	में	तू पहचान लेगा	23	देखते होंगे	तख़्त (जमा)	पर

نَضْرَةَ النَّعِيْمِ ﴿٢٤﴾ يُسْقَوْنَ مِنْ رَّحِيْقٍ مَّخْتُوْمٍ ﴿٢٥﴾ خِتٰمُهٗ

उस की मुहर	25	मुहर लगी हुई	ख़ालिस शराब	से	उन्हें पिलाई जाती है	24	तर ओ ताज़गी नेमत की

مِسْكٌ ۭ وَفِيْ ذٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُوْنَ ﴿٢٦﴾

26	रग़बत करने वाले	चाहिए कि रग़बत (कोशिश) करें	उस	और में	मुश्क

وَمِزَاجُهٗ مِنْ تَسْنِيْمٍ ﴿٢٧﴾ عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُوْنَ ﴿٢٨﴾

28	मुक़र्रब	उस से	पीते हैं	एक चश्मा	27	तस्नीम	से	उस की आमेज़िश

اِنَّ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا كَانُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَضْحَكُوْنَ ﴿٢٩﴾

29	हँसते	जो ईमान लाए (मोमिन)	से (पर)	थे	जुर्म किया उन्हों ने	वह लोग जो	बेशक

وَاِذَا مَرُّوْا بِهِمْ يَتَغَامَزُوْنَ ﴿٣٠﴾ وَاِذَا انْقَلَبُوْۤا اِلٰۤى

तरफ़	वह लौटते	और जब	30	आँख मारते	उन से	गुज़रते	और जब

اَهْلِهِمُ انْقَلَبُوْا فَكِهِيْنَ ﴿٣١﴾ وَاِذَا رَاَوْهُمْ قَالُوْۤا اِنَّ

बेशक	कहते	उन्हें देखते	और जब	31	हँसते (बातें बनाते)	लौटते	अपने घर वाले

هٰۤؤُلَآءِ لَضَآلُّوْنَ ﴿٣٢﴾ وَمَاۤ اُرْسِلُوْا عَلَيْهِمْ حٰفِظِيْنَ ﴿٣٣﴾

33	निगहबान	उन पर	और नहीं भेजे गए	32	गुमराह (जमा)	यह लोग

فَالْيَوْمَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحَكُوْنَ ﴿٣٤﴾ عَلَى

पर	34	हँसते हैं	काफ़िर (जमा)	से (पर)	ईमान वाले	पस आज

ع ٣٦ / ٨

الْاَرَآئِكِ ۙ يَنْظُرُوْنَ ﴿٣٥﴾ هَلْ ثُوِّبَ الْكُفَّارُ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٦﴾

36	जो वह करते थे	काफ़िर (जमा)	सवाब मिल गया	क्या	35	देखते हैं	तख़्त

اٰيَاتُهَا ٢٥ ❀ (٨٤) سُوْرَةُ الْاِنْشِقَاقِ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ 1	(84) सूरतुल इंशिक़ाक़ फट जाना	आयात 25

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اِذَا السَّمَآءُ انْشَقَّتْ ﴿١﴾ وَاَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ﴿٢﴾ وَاِذَا

और जब	2	और इसी लाइक़ है	अपने रब का	और सुन लेगा	1	फट जाएगा	आस्मान	जब

الْاَرْضُ مُدَّتْ ﴿٣﴾ وَاَلْقَتْ مَا فِيْهَا وَتَخَلَّتْ ﴿٤﴾ وَاَذِنَتْ

और सुन लेगा	4	और ख़ाली हो जाएगी	जो उस में	और निकाल डालेगी	3	फैलादी जाएगी	ज़मीन

لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ﴿٥﴾ يٰاَيُّهَا الْاِنْسَانُ اِنَّكَ كَادِحٌ اِلٰى رَبِّكَ

अपने रब की तरफ़	आगे बढ़ने वाला	बेशक तू	इन्सान	ऐ	5	और इसी लाइक़ है	अपने रब का

كَدْحًا فَمُلٰقِيْهِ ﴿٦﴾ فَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ ﴿٧﴾

7	उस के दाएं हाथ में	उस का आमाल नामा	दिया गया	जो	पस	6	फिर उस को मिलना है	मशक़्क़त

فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَّسِيْرًا ﴿٨﴾ وَّيَنْقَلِبُ اِلٰٓى اَهْلِهٖ

अपने लोग	तरफ़	और लौटेगा	8	आसान	हिसाब	हिसाब लिया जाएगा	पस अनक़रीब

مَسْرُوْرًا ﴿٩﴾ وَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ وَرَآءَ ظَهْرِهٖ ﴿١٠﴾ فَسَوْفَ

पस अनक़रीब	10	उस की पुश्त	पीछे	उस का आमाल नामा	दिया गया	जो	और वह	9	ख़ुश ख़ुश

يَدْعُوْا ثُبُوْرًا ﴿١١﴾ وَّيَصْلٰى سَعِيْرًا ﴿١٢﴾ اِنَّهٗ كَانَ فِيْٓ اَهْلِهٖ

अपने लोग	में	था	बेशक वह	12	आग	और दाख़िल होगा	11	मौत	मांगेगा

معانقة ١٢ عند المتأخرين ١٢

مَسْرُوْرًا ﴿١٣﴾ اِنَّهٗ ظَنَّ اَنْ لَّنْ يَّحُوْرَ ﴿١٤﴾ بَلٰٓى ۚ اِنَّ رَبَّهٗ

बेशक उस का रब	क्यों नहीं	14	हरगिज़ न लौटेगा	कि	गुमान किया	बेशक वह	13	ख़ुश ओ ख़ुर्रम

كَانَ بِهٖ بَصِيْرًا ﴿١٥﴾ فَلَآ اُقْسِمُ بِالشَّفَقِ ﴿١٦﴾ وَالَّيْلِ وَمَا

और जो	और रात	16	शाम की सुर्ख़ी	सो मैं क़सम खाता हूँ	15	देखने वाला	उस को	था

وَسَقَ ﴿١٧﴾ وَالْقَمَرِ اِذَا اتَّسَقَ ﴿١٨﴾ لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَنْ طَبَقٍ ﴿١٩﴾ فَمَا

सो क्या	19	दर्जा	से	एक दर्जा	तुम को ज़रूर चढ़ना है	18	वह मुकम्मल हो जाए	जब	और चाँद	17	सिमट आती है

السجدة ١٣

لَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٢٠﴾ وَاِذَا قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرْاٰنُ لَا يَسْجُدُوْنَ ﴿٢١﴾

21	वह सिजदा नहीं करते	क़ुरआन	उन पर	पढ़ा जाता है	और जब	20	वह ईमान नहीं लाते	उन्हें

पस आज ईमान वाले काफ़िरों पर हँसते हैं। (34) तख़्तों (मसहरियों) पर बैठे देखते हैं। (35) क्या मिल गया काफ़िरों को बदला उस का जो वह करते थे। (36)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

जब आस्मान फट जाएगा, (1) और अपने रब का (हुक्म) सुन लेगा और वह इसी लाइक़ है, (2) और जब ज़मीन फैला दी जाएगी, (3) और जो कुछ उस में है उसे निकाल डालेगी और ख़ाली हो जाएगी, (4) और अपने रब का (हुक्म) सुन लेगी और वह इसी लाइक़ है। (5) ऐ इन्सान, बेशक तू चले जा रहा है अपने रब की तरफ़ मशक़्क़त उठाते, फिर उस को मिलना है। (6) पस जिस को उस का आमाल नामा दाएं हाथ में दिया गया, (7) पस उस से अनक़रीब आसान हिसाब लिया जाएगा, (8) और वह अपने लोगों की तरफ़ ख़ुश ख़ुश लौटेगा। (9) और वह जिस को उस का आमाल नामा उस की पीठ पीछे दिया गया, (10) वह अनक़रीब मौत मांगेगा, (11) और जहन्नम में जा पड़ेगा। (12) बेशक वह अपने लोगों में ख़ुश ओ ख़ुर्रम था। (13) उस ने गुमान किया था कि वह हरगिज़ न लौटेगा। (14) क्यों नहीं? उस का रब बेशक उसे देखता था। (15) सो मैं क़सम खाता हूँ शाम की सुर्ख़ी की, (16) और रात की और जो सिमट आती है। (17) और चाँद की जब मुकम्मल हो जाए, (18) तुम को दर्जा ब दर्जा ज़रूर चढ़ना है। (19) सो उन्हें क्या हो गया है कि वह ईमान नहीं लाते? (20) और जब उन पर क़ुरआन पढ़ा जाता है तो वह सिजदा नहीं करते। (21)

बल्कि जिन लोगों ने कुफ़्र किया (मुन्किर) वह झुटलाते हैं, (22) और अल्लाह खूब जानता है जो (दिलों में) भर रखते हैं, (23) सो उन्हें दर्दनाक अ़ज़ाब की ख़ुशख़बरी सुना। (24) सिवाए उन लोगों के जो ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे काम किए, उन के लिए ख़तम न होने वाला अजर है। (25)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

बुर्जों वाले आस्मान की क़सम, (1) और वादा किए हुए दिन की, (2) और देखने वाले की और देखी जाने वाली चीज़ की। (3) हलाक कर दिए गए ख़न्दक़ों वाले, (4) (उन ख़न्दक़ों वाले) जिन में ईंधन की आग थी, (5) जब वह उस पर बैठे थे, (6) और जो मोमिनों के साथ करते थे (अपनी आँखों से) देखते थे। (7) और उन्हों ने (मोमिनों से) बदला नहीं लिया मगर इस बात का कि वह ईमान लाए अल्लाह पर जो ग़ालिब है तारीफ़ों वाला, (8) जिस की बादशाहत है आस्मानों और ज़मीन में, और अल्लाह हर चीज़ पर बाख़बर है। (9) बेशक जिन लोगों ने मोमिन मर्दों और मोमिन औ़रतों को तक्लीफ़ें दीं, फिर उन्हों ने तौबा न की तो उन के लिए जहन्नम का अ़ज़ाब है और उन के लिए जलने का अ़ज़ाब है, (10) बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए, उन के लिए बाग़ात हैं जिन के नीचे जारी हैं नहरें, यह बड़ी कामयाबी है। (11) बेशक तुम्हारे रब की पकड़ बड़ी सख़्त है। (12) बेशक वही पहली बार पैदा करता है और (वही) लौटाता है। (13)

بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُكَذِّبُوْنَ ﴿٢٢﴾ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يُوْعُوْنَ ﴿٢٣﴾

बल्कि	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (मुन्किर)	झुटलाते हैं	22	और अल्लाह	खूब जानता है	जो	भर रखते हैं	23

فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٢٤﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا

सो उन्हें खुशख़बरी सुनाओ	अ़ज़ाब की	दर्दनाक	24	सिवाए	जो लोग ईमान लाए	उन्हों ने काम किए

الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ﴿٢٥﴾ ع ٢٥ ٩

अच्छे	उन के लिए	अजर	न ख़तम होने वाला	25

آيَاتُهَا ٢٢ ❀ سُوْرَةُ الْبُرُوْجِ (٨٥) ❀ رُكُوْعُهَا ١

आयात 22 — (85) सूरतुल बुरूज — तारे और सय्यारे — रुकुअ 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْبُرُوْجِ ﴿١﴾ وَالْيَوْمِ الْمَوْعُوْدِ ﴿٢﴾ وَشَاهِدٍ

क़सम आस्मान की	बुर्जों वाला	1	और दिन की	वादा किए हुए	2	और देखने वाले

وَّمَشْهُوْدٍ ﴿٣﴾ قُتِلَ اَصْحٰبُ الْاُخْدُوْدِ ﴿٤﴾ النَّارِ ذَاتِ الْوَقُوْدِ ﴿٥﴾

और देखी जाने वाली	3	हलाक कर दिए गए	गढ़े वाले	4	आग	ईंधन वाली	5

اِذْ هُمْ عَلَيْهَا قُعُوْدٌ ﴿٦﴾ وَّهُمْ عَلٰى مَا يَفْعَلُوْنَ

जब वह	उस पर	बैठे थे	6	और वह	पर	जो	वह करते थे

بِالْمُؤْمِنِيْنَ شُهُوْدٌ ﴿٧﴾ وَمَا نَقَمُوْا مِنْهُمْ اِلَّآ اَنْ يُّؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ

मोमिनों के साथ	देखते	7	और नहीं बदला लिया	उन से	मगर	कि	वह ईमान लाए	अल्लाह पर

الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ﴿٨﴾ الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

ग़ालिब	तारीफ़ों वाला	8	वह जो कि	उस के लिए	बादशाहत	आस्मान (जमा)	और ज़मीन

وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿٩﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِيْنَ

और अल्लाह	पर	हर	चीज़	सामने (बाख़बर)	9	बेशक	वह जो	तक्लीफ़ें दीं	मोमिन मर्द (जमा)

وَالْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَتُوْبُوْا فَلَهُمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَلَهُمْ عَذَابُ

और मोमिन औरतें	फिर	उन्हों ने तौबा न की	तो उन के लिए	अ़ज़ाब	जहन्नम	और उन के लिए	अ़ज़ाब

الْحَرِيْقِ ﴿١٠﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ جَنّٰتٌ

जलना	10	बेशक	जो लोग ईमान लाए	और उन्हों ने अ़मल किए	अच्छे	उन के लिए	बाग़ात

تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيْرُ ﴿١١﴾ اِنَّ

जारी हैं	से	उन के नीचे	नहरें	यह	कामयाबी	बड़ी	11	बेशक

بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيْدٌ ﴿١٢﴾ اِنَّهٗ هُوَ يُبْدِئُ وَيُعِيْدُ ﴿١٣﴾

पकड़	तुम्हारा रब	बड़ी सख़्त	12	बेशक वह	वही	पहली बार पैदा करता है	और लौटाता है	13

وَهُوَ الْغَفُوْرُ الْوَدُوْدُ ﴿١٤﴾ ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيْدُ ﴿١٥﴾ فَعَّالٌ لِّمَا

जो	कर डालने वाला	15	बड़ी बुज़ुर्गी वाला	अ़र्श वाला (मालिक)	14	मुहब्बत वाला	बख़्शने वाला	और वह

يُرِيْدُ ﴿١٦﴾ هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْجُنُوْدِ ﴿١٧﴾ فِرْعَوْنَ وَثَمُوْدَ ﴿١٨﴾

18	और समूद	फ़िरऔ़न	17	लशकर (जमा)	बात	तुझ को आई (पहुँची)	क्या	16	वह चाहे

بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ تَكْذِيْبٍ ﴿١٩﴾ وَّاللّٰهُ مِنْ وَّرَآئِهِمْ مُّحِيْطٌ ﴿٢٠﴾

20	घेरे हुए	उन को हर तरफ़	से	और अल्लाह	19	झुटलाना	में	उन्हो ने कुफ़्र किया	वह जो कि	बल्कि

ع ٢٢ ١٠ بَلْ هُوَ قُرْاٰنٌ مَّجِيْدٌ ﴿٢١﴾ فِيْ لَوْحٍ مَّحْفُوْظٍ ﴿٢٢﴾

22	महफ़ूज़	लौहे	में	21	बड़ी बुज़ुर्गी वाला	क़ुरआन	यह	बल्कि

آيَاتُهَا ١٧ ❀ سُوْرَةُ الطَّارِقِ (٨٦) ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1 — (86) सूरतुत तारिक़ / चमकता हुआ सितारा — आयात 17

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

وَالسَّمَآءِ وَالطَّارِقِ ﴿١﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الطَّارِقُ ﴿٢﴾

2	क्या है तारिक़	और तुम ने क्या समझा	1	और रात को आने वाली की	क़सम है आस्मान की

النَّجْمُ الثَّاقِبُ ﴿٣﴾ اِنْ كُلُّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ﴿٤﴾

4	निगहबान	उस पर	मगर	जान	कोई	नहीं	3	चमकता हुआ	सितारा

فَلْيَنْظُرِ الْاِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ ﴿٥﴾ خُلِقَ مِنْ مَّآءٍ دَافِقٍ ﴿٦﴾

6	उछलता हुआ	पानी	से	पैदा किया गया	5	पैदा किया गया है	किस चीज़ से	इन्सान	चाहिए कि देखे

يَّخْرُجُ مِنْ بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَآئِبِ ﴿٧﴾ اِنَّهٗ عَلٰى رَجْعِهٖ

उस को दोबारा लौटाना	पर	बेशक वह	7	और सीना	पीठ	दरमियान	से	निकलता है

لَقَادِرٌ ﴿٨﴾ يَوْمَ تُبْلَى السَّرَآئِرُ ﴿٩﴾ فَمَا لَهٗ مِنْ قُوَّةٍ

क़ुव्वत	से	तो न उस के लिए	9	राज़	जांचे जाएंगे	दिन	8	क़ादिर

وَّلَا نَاصِرٍ ﴿١٠﴾ وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الرَّجْعِ ﴿١١﴾ وَالْاَرْضِ

और ज़मीन की	11	बारिश वाला	क़सम आस्मान की	10	मददगार	और न

ذَاتِ الصَّدْعِ ﴿١٢﴾ اِنَّهٗ لَقَوْلٌ فَصْلٌ ﴿١٣﴾ وَّمَا هُوَ بِالْهَزْلِ ﴿١٤﴾

14	बेहूदा बात	यह	और नहीं	13	फ़ैसला कर देने वाला	कलाम	बेशक यह	12	फट जाने वाली

اِنَّهُمْ يَكِيْدُوْنَ كَيْدًا ﴿١٥﴾ وَّاَكِيْدُ كَيْدًا ﴿١٦﴾ فَمَهِّلِ الْكٰفِرِيْنَ

काफ़िर (जमा)	पस ढील दो	16	एक तदबीर	और मैं तदबीर करता हूँ	15	तदबीर	तदबीर करते है	बेशक वह

ع ١٧ ١١ اَمْهِلْهُمْ رُوَيْدًا ﴿١٧﴾

17	थोड़ी	ढील दो उन्हें

और वही बख़्शने वाला मुहब्बत करने वाला है, (14)
अ़र्श का मालिक बड़ी बुज़ुर्गी वाला, (15)
जो चाहे कर डालने वाला। (16)
क्या तुम्हारे पास लशकरों की बात (ख़बर) पहुँची, (17)
फ़िरऔ़न और समूद की। (18)
बल्कि जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) झुटलाने में (लगे हुए हैं), (19)
और अल्लाह उन्हें हर तरफ़ से घेरे हुए है। (20)
बल्कि यह क़ुरआन बड़ी बुज़ुर्गी वाला है, (21)
लौहे महफ़ूज़ में (लिखा हुआ)। (22)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

क़सम है आस्मान की और "तारिक़" (रात को आने वाले) की। (1)
और तुम ने क्या समझा कि "तारिक़" क्या है? (2)
चमकता हुआ सितारा। (3)
कोई जान नहीं जिस पर (कोई) निगहबान न हो। (4)
और इन्सान को चाहिए कि देखे वह किस चीज़ से पैदा किया गया है? (5)
वह पैदा किया गया उछलते हुए पानी से, (6)
जो निकलता है पीठ और सीने के दरमियान से। (7)
बेशक वह (अल्लाह) उस को दोबारा लौटाने पर क़ादिर है। (8)
जिस दिन (लोगों के) राज़ जांचे जाएंगे। (9)
तो न उसे (इन्सान को) कोई क़ुव्वत होगी और न मददगार। (10)
क़सम आस्मान की, बारिश वाला। (11)
और ज़मीन की, फट जाने वाली। (12)
बेशक यह कलाम है फ़ैसला कर देने वाला, (13)
और यह हंसी मज़ाक़ नहीं। (14)
बेशक वह (उल्टी उल्टी) तदबीरें करते हैं, (15)
और मैं (भी) एक तदबीर करता हूँ। (16)
पस ढील दो काफ़िरों को थोड़ी ढील। (17)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
पाकीज़गी बयान कर अपने सब से बुलन्द रब के नाम की, (1)
जिस ने पैदा किया फिर ठीक किया, (2)
और जिस ने अन्दाज़ा ठहराया फिर राह दिखाई, (3)
और जिस ने चारा उगाया, (4)
फिर उसे ख़ुश्क सियाह कर दिया। (5)
हम जल्द आप (स) को पढ़ाएंगे, फिर आप (स) न भूलेंगे, (6)
मगर जो अल्लाह चाहे, बेशक वह जानता है ज़ाहिर भी और पोशीदा भी। (7)
और हम आप (स) को आसान तरीक़े की सहूलत देंगे। (8)
पस आप (स) समझा दें अगर समझाना नफ़ा दे। (9)
जो डरता है वह जल्द समझ जाएगा, (10)
और उस से बदबख़्त पहलू तही करेगा, (11)
जो बहुत बड़ी आग में दाख़िल होगा। (12)
फिर न मरेगा वह उस में और न जिएगा। (13)
यक़ीनन उस ने फ़लाह पाई जो पाक हुआ, (14)
और उस ने अपने रब का नाम याद किया, फिर नमाज़ पढ़ी। (15)
बल्कि तुम दुन्यवी ज़िन्दगी को तरजीह देते हो। (16)
और (जबकि) आख़िरत बेहतर और बाक़ी रहने वाली है। (17)
बेशक यह पहले सहीफ़ों में (भी कही गई थी), (18)
इब्राहीम (अ) और मूसा (अ) के सहीफ़ों में। (19)
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
क्या तुम्हारे पास ढांपने वाली (क़ियामत) की बात पहुँची। (1)
कितने ही मुँह उस दिन ज़लील ओ आजिज़ होंगे, (2)
अ़मल करने वाले, मुशक़्क़त उठाने वाले। (3)
दहकती हुई आग में दाख़िल होंगे, (4)
खौलते हुए चश्मे से (पानी) पिलाए जाएंगे, (5)
न उन के लिए खाना होगा मगर ख़ार दार घास से, (6)
जो न मोटा करेगी और न भूक से बेनियाज़ करेगी। (7)

آيَاتُهَا ١٩ ❀ سُوْرَةُ الْاَعْلٰى (٨٧) ❀ رُكُوْعُهَا ١

आयात 19 — (87) सूरतुल आला — सब से बुलन्द — रुकूअ़ 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلَى ﴿١﴾ الَّذِیْ خَلَقَ فَسَوّٰى ﴿٢﴾ وَالَّذِیْ قَدَّرَ

और जिस ने अन्दाज़ा ठहराया	2	फिर ठीक किया	पैदा किया	जिस ने	1	सब से बुलन्द	अपना रब	नाम	पाकीज़गी बयान कर

فَهَدٰى ﴿٣﴾ وَالَّذِیْۤ اَخْرَجَ الْمَرْعٰى ﴿٤﴾ فَجَعَلَهٗ غُثَآءً اَحْوٰى ﴿٥﴾

5	सियाह	ख़ुश्क	फिर उसे कर दिया	4	चारा	निकाला (उगाया)	और जिस ने	3	फिर राह दिखाई

سَنُقْرِئُكَ فَلَا تَنْسٰۤى ﴿٦﴾ اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ اِنَّهٗ يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَمَا

और जो	ज़ाहिर	जानता है	बेशक वह	अल्लाह चाहे	जो	मगर	6	फिर न भूलेंगे आप	हम जल्द पढ़ाएंगे आप (स) को

يَخْفٰى ﴿٧﴾ وَنُيَسِّرُكَ لِلْيُسْرٰى ﴿٨﴾ فَذَكِّرْ اِنْ نَّفَعَتِ الذِّكْرٰى ﴿٩﴾ سَيَذَّكَّرُ

जल्द समझ जाएगा	9	समझाना	नफ़ा दे	अगर	पस समझा दें	8	आसान तरीक़ा	और हम आप (स) को सहूलत देंगे	7	पोशीदा

مَنْ يَّخْشٰى ﴿١٠﴾ وَيَتَجَنَّبُهَا الْاَشْقَى ﴿١١﴾ الَّذِیْ يَصْلَى النَّارَ الْكُبْرٰى ﴿١٢﴾

12	बहुत बड़ी	आग	दाख़िल होगा	जो	11	बद बख़्त	और पहलू तही करेगा उस से	10	डरता है	जो

ثُمَّ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَلَا يَحْيٰى ﴿١٣﴾ قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى ﴿١٤﴾ وَذَكَرَ اسْمَ

नाम	और याद किया	14	पाक हुआ	जो	यक़ीनन उस ने फ़लाह पाई	13	और न जिएगा	उस में	न मरेगा वह	फिर

رَبِّهٖ فَصَلّٰى ﴿١٥﴾ بَلْ تُؤْثِرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿١٦﴾ وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ

बेहतर	आर आख़िरत	16	दुनिया	ज़िन्दगी	बढ़ाते हो (तरजीह)	बल्कि	15	फिर नमाज़ पढ़ी	अपना रब

وَّاَبْقٰى ﴿١٧﴾ اِنَّ هٰذَا لَفِی الصُّحُفِ الْاُوْلٰى ﴿١٨﴾ صُحُفِ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى ﴿١٩﴾ ع ١٩ ١٢

19	और मूसा (अ)	इब्राहीम (अ)	सहीफ़े	18	पहले सहीफ़े	में	बेशक यह	17	और बाक़ी रहने वाली

آيَاتُهَا ٢٦ ❀ سُوْرَةُ الْغَاشِيَةِ (٨٨) ❀ رُكُوْعُهَا ١

आयात 26 — (88) सूरतुल ग़ाशिया — छा जाने वाली — रुकूअ़ 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْغَاشِيَةِ ﴿١﴾ وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ خَاشِعَةٌ ﴿٢﴾ عَامِلَةٌ

अ़मल करने वाले	2	ज़लील ओ आजिज़	उस दिन	कितने मुँह	1	ढांपने वाली	बात	क्या तुम्हारे पास आई

نَّاصِبَةٌ ﴿٣﴾ تَصْلٰى نَارًا حَامِيَةً ﴿٤﴾ تُسْقٰى مِنْ عَيْنٍ اٰنِيَةٍ ﴿٥﴾ لَيْسَ

नहीं	5	खौलता हुआ	चश्मा	से	पिलाए जाएंगे	4	दहकती हुई	आग	दाख़िल होंगे	3	मुशक़्क़त उठाने वाले

لَهُمْ طَعَامٌ اِلَّا مِنْ ضَرِيْعٍ ﴿٦﴾ لَّا يُسْمِنُ وَلَا يُغْنِیْ مِنْ جُوْعٍ ﴿٧﴾

7	भूक	से	न बेनियाज़ करेगी	न मोटा करेगी	6	ख़ारदार घास	से	मगर	खाना	उन के लिए

وُجُوْهٌ يَّوْمَىِٕذٍ نَّاعِمَةٌ ﴿٨﴾ لِّسَعْيِهَا رَاضِيَةٌ ﴿٩﴾ فِيْ جَنَّةٍ

बाग़	में	9	खुश खुश	अपनी कोशिश से	8	तर ओ ताज़ा	उस दिन	कितने मुँह

وقف لازم

عَالِيَةٍ ﴿١٠﴾ لَّا تَسْمَعُ فِيْهَا لَاغِيَةً ﴿١١﴾ فِيْهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ﴿١٢﴾ فِيْهَا

उस में	12	बहता हुआ	चश्मा	उस में	11	बेहूदा बकवास	उस में	वह न सुनेंगे	10	बुलन्द

سُرُرٌ مَّرْفُوْعَةٌ ﴿١٣﴾ وَّاَكْوَابٌ مَّوْضُوْعَةٌ ﴿١٤﴾ وَّنَمَارِقُ

और गद्दे	14	चुने हुए	और कटोरे	13	ऊँचे ऊँचे	तख़्त

مَصْفُوْفَةٌ ﴿١٥﴾ وَّزَرَابِيُّ مَبْثُوْثَةٌ ﴿١٦﴾ اَفَلَا يَنْظُرُوْنَ اِلَى الْاِبِلِ

ऊँट	तरफ़	क्या वह नहीं देखते?	16	बिखरे हुए	और क़ालीन	15	तरतीब से लगे हुए

كَيْفَ خُلِقَتْ ﴿١٧﴾ وَاِلَى السَّمَآءِ كَيْفَ رُفِعَتْ ﴿١٨﴾ وَاِلَى الْجِبَالِ

पहाड़ (जमा)	और तरफ़	18	बुलन्द किया गया	कैसे	आस्मान	और तरफ़	17	वह पैदा किया गया	कैसे

كَيْفَ نُصِبَتْ ﴿١٩﴾ وَاِلَى الْاَرْضِ كَيْفَ سُطِحَتْ ﴿٢٠﴾

20	बिछाई गई	कैसे	ज़मीन	और तरफ़	19	खड़े किए गए	कैसे

فَذَكِّرْ اِنَّمَآ اَنْتَ مُذَكِّرٌ ﴿٢١﴾ لَسْتَ عَلَيْهِمْ بِمُصَّيْطِرٍ ﴿٢٢﴾

22	दारोग़ा	उन पर	नहीं आप	21	समझाने वाले	आप	सिर्फ़	पस समझाते रहें

اِلَّا مَنْ تَوَلّٰى وَكَفَرَ ﴿٢٣﴾ فَيُعَذِّبُهُ اللّٰهُ الْعَذَابَ الْاَكْبَرَ ﴿٢٤﴾

24	बड़ा	अ़ज़ाब	पस उसे अ़ज़ाब देगा अल्लाह	23	और कुफ़्र किया	मुँह मोड़ा	जो-जिस	मगर

ع ٢٦ النصف ١٣

اِنَّ اِلَيْنَآ اِيَابَهُمْ ﴿٢٥﴾ ثُمَّ اِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُمْ ﴿٢٦﴾

26	उन का हिसाब	हम पर	बेशक	फिर	25	उन का लौटना	हमारी तरफ़	बेशक

آيَاتُهَا ٣٠ ❀ (٨٩) سُوْرَةُ الْفَجْرِ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ 1 — (89) सूरतुल फ़ज्र / सुबह सवेरा — आयात 30

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وَالْفَجْرِ ﴿١﴾ وَلَيَالٍ عَشْرٍ ﴿٢﴾ وَّالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ ﴿٣﴾ وَالَّيْلِ اِذَا

जब	और रात की	3	और ताक़ की	और जुफ़्त की	2	दस	और रातों की	1	क़सम फ़ज्र की

يَسْرِ ﴿٤﴾ هَلْ فِيْ ذٰلِكَ قَسَمٌ لِّذِيْ حِجْرٍ ﴿٥﴾ اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ

मामला किया	कैसा	क्या तुम ने नहीं देखा	5	हर अक़्लमन्द के नज़दीक	क़सम	इस	में	क्या	4	चले

رَبُّكَ بِعَادٍ ﴿٦﴾ اِرَمَ ذَاتِ الْعِمَادِ ﴿٧﴾ الَّتِيْ لَمْ يُخْلَقْ مِثْلُهَا

उस जैसा	नहीं पैदा किया गया	वह जो	7	सुतूनों वाले	इरम	6	आ़द के साथ	तुम्हारा रब

فِي الْبِلَادِ ﴿٨﴾ وَثَمُوْدَ الَّذِيْنَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ ﴿٩﴾

9	वादी में	काटे (तराशे) सख़्त पत्थर	जिन्हों ने	और समूद	8	शहरों में

कितने ही मुँह उस दिन तर ओ ताज़ा होंगे। (8) अपनी कोशिश (कमाई) से खुश खुश, (9) बुलन्द बाग़ में, (10) उस में वह न सुनेंगे बेहूदा बकवास, (11) उस में एक बहता हुआ चश्मा है। (12) उस में ऊँचे ऊँचे तख़्त हैं, (13) और आबख़ोरे चुने हुए, (14) और गद्दे तरतीब से लगे हुए, (15) और क़ालीन बिखरे हुए (फैले हुए)। (16) क्या वह नहीं देखते? ऊँट की तरफ़ कि वह कैसे पैदा किए गए। (17) और आस्मान की तरफ़ कि कैसे बुलन्द किया गया? (18) और पहाड़ों की तरफ़ कि कैसे खड़े किए गए? (19) और ज़मीन की तरफ़ कि कैसे बिछाई गई? (20) पस आप समझाते रहें, आप (स) सिर्फ़ समझाने वाले हैं। (21) आप (स) उन पर दारोग़ा नहीं, (22) मगर जिस ने मुँह मोड़ा और कुफ़्र किया (मुन्किर हो गया), (23) पस अल्लाह उसे अ़ज़ाब देगा बहुत बड़ा अ़ज़ाब। (24) बेशक उन्हें हमारी तरफ़ लौटना है, (25) फिर बेशक हम पर (हमारा काम) है उन का हिसाब लेना। (26)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

क़सम फ़ज्र की, (1) और दस रातों की, (2) और जुफ़्त और ताक़ की, (3) और रात की जब वह चले। (4) क्या इस में (इन चीज़ों की) क़सम हर अ़क़्लमन्द के नज़दीक मोतबर है? (5) क्या तुम ने नहीं देखा कि तुम्हारे रब ने क्या मामला किया आ़द के साथ, (6) इरम के सुतूनों वाले, (7) उस जैसी क़ौम दुनिया के मुल्कों में पैदा नहीं की गई। (8) और समूद के साथ जिन्हों ने वादी में सख़्त पत्थर तराशे, (9)

और कीलों वाले फ़िरऔ़न के साथ, (10)
जिन्हों ने शहरों में सरकशी की, (11)
फिर उन शहरों में बहुत फ़साद किया। (12)
पस उन पर तुम्हारे रब ने अ़ज़ाब का कोड़ा बरसा दिया। (13)
बेशक तुम्हारा रब घात में है। (14)
पस इन्सान को जब उस का रब आज़माए, फिर उस को इज़्ज़त दे और नेमत दे, तो वह कहे कि मेरे रब ने मुझे इज़्ज़त दी। (15)
और जब उसे आज़माए और उसे रोज़ी अन्दाज़े से (तंग कर के) दे तो वह कहे कि मेरे रब ने मुझे ज़लील किया। (16)
हरगिज़ नहीं, बल्कि तुम यतीम की इज़्ज़त नहीं करते, (17)
और रग़बत नहीं देते मिस्कीन को खाना खिलाने की, (18)
और तुम माले मीरास समेट समेट कर खाते हो, (19)
और माल से मुहब्बत करते हो बहुत ज़ियादा मुहब्बत। (20)
हरगिज़ नहीं, जब ज़मीन कूट कूट कर पस्त कर दी जाए, (21)
और आए तुम्हारा रब और (आएं) फ़रिश्ते क़तार दर क़तार। (22)
और उस दिन जहन्नम लाई जाए, उस दिन इन्सान सोचेगा और उसे कहां सोचना (नफ़ा) देगा? (23)
कहेगा ऐ काश! मैं ने अपनी इस ज़िन्दगी के लिए पहले (नेक अ़मल) भेजा होता। (24)
पस उस दिन उस जैसा अ़ज़ाब कोई न देगा, (25)
न उस जैसा बान्धना कोई बान्ध कर रखेगा। (26)
ऐ रूहे मुत्मइन (इत्मीनान वाली)। (27)
लौट चल अपने रब की तरफ़, वह तुझ से राज़ी, तू उस से राज़ी, (28)
पस दाख़िल हो जा मेरे बन्दों में। (29)
और दाख़िल हो जा मेरी जन्नत में। (30)

وَفِرۡعَوۡنَ ذِى الۡاَوۡتَادِ ۝١٠ الَّذِيۡنَ طَغَوۡا فِى الۡبِلَادِ ۝١١

11	शहरों में	सरकशी की	वह जिन्हों ने	10	कीलों वाला	और फ़िरऔ़न

فَاَكۡثَرُوۡا فِيۡهَا الۡفَسَادَ ۝١٢ فَصَبَّ عَلَيۡهِمۡ رَبُّكَ سَوۡطَ

कोड़ा	तुम्हारा रब	उन पर	पस बरसा दिया	12	फ़साद	उस में	बहुत किया

عَذَابٍ ۝١٣ اِنَّ رَبَّكَ لَبِالۡمِرۡصَادِ ۝١٤ فَاَمَّا الۡاِنۡسَانُ اِذَا

जब	इन्सान	पस जो	14	घात में	तुम्हारा रब	बेशक	13	अ़ज़ाब

مَا ابۡتَلٰٮهُ رَبُّهٗ فَاَكۡرَمَهٗ وَنَعَّمَهٗ فَيَقُوۡلُ رَبِّىۡۤ اَكۡرَمَنِ ۝١٥

15	मुझे इज़्ज़त दी	मेरा रब	तो वह कहे	और उसे नेमत दे	उस को इज़्ज़त दे	उस का रब	उस को आज़माए

وَاَمَّاۤ اِذَا مَا ابۡتَلٰٮهُ فَقَدَرَ عَلَيۡهِ رِزۡقَهٗ فَيَقُوۡلُ رَبِّىۡۤ

मेरा रब	तो वह कहे	उस का रिज़्क़	उस पर	अन्दाज़े से देता है	उसे आज़माए	और जब

اَهَانَنِ ۝١٦ كَلَّا بَلۡ لَّا تُكۡرِمُوۡنَ الۡيَتِيۡمَ ۝١٧ وَلَا تَحٰٓضُّوۡنَ

और रग़बत नहीं देते	17	यतीम	इज़्ज़त नहीं करते	हरगिज़ नहीं, बल्कि	16	मुझे ज़लील किया

عَلٰى طَعَامِ الۡمِسۡكِيۡنِ ۝١٨ وَتَاۡكُلُوۡنَ التُّرَاثَ اَكۡلًا لَّـمًّا ۝١٩

19	खाना समेट कर	माले मीरास	और तुम खाते हो	18	मिस्कीन	खाना	पर

وَّتُحِبُّوۡنَ الۡمَالَ حُبًّا جَمًّا ۝٢٠ كَلَّاۤ اِذَا دُكَّتِ الۡاَرۡضُ

ज़मीन	पस्त कर दी जाएगी	हरगिज़ नहीं जब	20	बहुत	मुहब्बत	माल	और मुहब्बत करते हो

دَكًّا دَكًّا ۝٢١ وَّجَآءَ رَبُّكَ وَالۡمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ۝٢٢ وَجِاىۡٓءَ

और लाई जाए	22	क़तार दर क़तार	और (आएं) फ़रिश्ते	तुम्हारा रब	और आएगा	21	कूट कूट कर

يَوۡمَـئِذٍۢ بِجَهَنَّمَ ۙ يَوۡمَـئِذٍ يَّتَذَكَّرُ الۡاِنۡسَانُ وَاَنّٰى لَـهُ

उस के लिए	और कहां	इन्सान	सोचेगा	उस दिन	जहन्नम में	उस दिन

الذِّكۡرٰى ۝٢٣ يَقُوۡلُ يٰلَيۡتَنِىۡ قَدَّمۡتُ لِحَيَاتِىۡ ۝٢٤ فَيَوۡمَـئِذٍ

पस उस दिन	24	अपनी ज़िन्दगी के लिए	मैं ने पहले भेजा होता	ऐ काश	वह कहेगा	23	सोचना

لَّا يُعَذِّبُ عَذَابَهٗۤ اَحَدٌ ۝٢٥ وَّلَا يُوۡثِقُ وَثَاقَهٗۤ

उस का बान्धना	और न बान्ध कर रखे	25	कोई	उस का अ़ज़ाब	अ़ज़ाब न देगा

اَحَدٌ ۝٢٦ يٰۤاَيَّتُهَا النَّفۡسُ الۡمُطۡمَـئِنَّةُ ۝٢٧ ارۡجِعِىۡۤ اِلٰى

तरफ़	लौट चल	27	मुत्मइन	नफ़्स	ऐ	26	कोई

رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرۡضِيَّةً ۝٢٨ فَادۡخُلِىۡ فِىۡ عِبٰدِىۡ ۝٢٩

29	मेरे बन्दे	में	पस दाख़िल हो	28	वह तुझ से राज़ी	राज़ी	अपने रब

وَادۡخُلِىۡ جَنَّتِىۡ ۝٣٠ ع ١ ١٤

30	मेरी जन्नत	और दाख़िल हो

اٰيَاتُهَا ٢٠ ❀ (٩٠) سُوۡرَةُ الۡبَلَدِ ❀ رُكُوۡعُهَا ١

रुकूअ 1 | (90) सूरतुल बलद — शहर | आयात 20

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रह्म करने वाला है

لَآ اُقۡسِمُ بِهٰذَا الۡبَلَدِ ۙ﴿۱﴾ وَاَنۡتَ حِلٌّۢ بِهٰذَا الۡبَلَدِ ۙ﴿۲﴾ وَوَالِدٍ

नहीं-मैं क़सम खाता हूँ	इस	शहर	1	और आप (स)	हलाल कर लिया गया	इस	शहर	2	और वालिद की

وَّمَا وَلَدَ ۙ﴿۳﴾ لَقَدۡ خَلَقۡنَا الۡاِنۡسَانَ فِىۡ كَبَدٍ ؕ﴿۴﴾ اَيَحۡسَبُ اَنۡ لَّنۡ يَّقۡدِرَ

और औलाद	3	तहक़ीक़ हम ने पैदा किया	इन्सान	मुशक़्क़त में	4	क्या वह गुमान करता है	कि	हरगिज़ बस नहीं चलेगा

وقف لازم عَلَيۡهِ اَحَدٌ ۘ﴿۵﴾ يَقُوۡلُ اَهۡلَكۡتُ مَالًا لُّبَدًا ؕ﴿۶﴾ اَيَحۡسَبُ اَنۡ لَّمۡ يَرَهٗۤ

उस पर	किसी	5	वह कहता है	उड़ा दिया	माल	ढेरों	6	क्या वह गुमान करता है	कि	उस को नहीं देखा

اَحَدٌ ؕ﴿۷﴾ اَلَمۡ نَجۡعَلۡ لَّهٗ عَيۡنَيۡنِ ۙ﴿۸﴾ وَلِسَانًا وَّشَفَتَيۡنِ ۙ﴿۹﴾ وَهَدَيۡنٰهُ

किसी	7	क्या नहीं	हम ने बनाया	उस के लिए	दो आँखें	8	और ज़बान	और दो होंट	9	और हम ने उसे दिखाए

النَّجۡدَيۡنِ ۚ﴿۱۰﴾ فَلَا اقۡتَحَمَ الۡعَقَبَةَ ۫ۖ﴿۱۱﴾ وَمَاۤ اَدۡرٰىكَ مَا الۡعَقَبَةُ ؕ﴿۱۲﴾ فَكُّ

दो रास्ते	10	पस न दाख़िल हुआ वह	घाटी	11	और क्या	तुम समझे	क्या	अक़्बा	12	छुड़ाना

رَقَبَةٍ ۙ﴿۱۳﴾ اَوۡ اِطۡعٰمٌ فِىۡ يَوۡمٍ ذِىۡ مَسۡغَبَةٍ ۙ﴿۱۴﴾ يَّتِيۡمًا ذَا مَقۡرَبَةٍ ۙ﴿۱۵﴾

गर्दन (असीर)	13	या	खाना खिलाना	में	दिन	भूक वाले	14	यतीम	क़राबतदार	15

اَوۡ مِسۡكِيۡنًا ذَا مَتۡرَبَةٍ ؕ﴿۱۶﴾ ثُمَّ كَانَ مِنَ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَتَوَاصَوۡا

या	मिस्कीन	ख़ाक नशीन	16	फिर	हो	से	जो ईमान लाए	और बाहम वसीयत की

بِالصَّبۡرِ وَتَوَاصَوۡا بِالۡمَرۡحَمَةِ ؕ﴿۱۷﴾ اُولٰٓـئِكَ اَصۡحٰبُ الۡمَيۡمَنَةِ ؕ﴿۱۸﴾

सब्र की	और बाहम नसीहत की	रहम खाने की	17	वह (यही) लोग	सीधे हाथ वाले (ख़ुश नसीब)	18

ع ١ ٢٠ ١٥ وَالَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا بِاٰيٰتِنَا هُمۡ اَصۡحٰبُ الۡمَشۡـئَمَةِ ؕ﴿۱۹﴾ عَلَيۡهِمۡ نَارٌ مُّؤۡصَدَةٌ ﴿۲۰﴾

और जिन लोगों ने इन्कार किया	हमारी आयात	वह	बाएं हाथ वाले (बद बख़्त)	19	उन पर	आग	मुंदी (बन्द) की हुई	20

اٰيَاتُهَا ١٥ ❀ (٩١) سُوۡرَةُ الشَّمۡسِ ❀ رُكُوۡعُهَا ١

रुकूअ 1 | (91) सूरतुश शम्स — सूरज | आयात 15

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रह्म करने वाला है

وَالشَّمۡسِ وَضُحٰٮهَا ۙ﴿۱﴾ وَالۡقَمَرِ اِذَا تَلٰٮهَا ۙ﴿۲﴾ وَالنَّهَارِ اِذَا

सूरज की क़सम	और उस की रोशनी	1	और चाँद की	जब	उस के पीछे निकले	2	और दिन की	जब

جَلّٰٮهَا ۙ﴿۳﴾ وَالَّيۡلِ اِذَا يَغۡشٰٮهَا ۙ﴿۴﴾ وَالسَّمَآءِ وَمَا بَنٰٮهَا ۙ﴿۵﴾

वह रोशन करदे	3	और रात की	जब	उसे ढांप दे	4	और आस्मान की	और जिस	उसे बनाया	5

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रह्म करने वाला है

नहीं, मैं इस शहर की क़सम खाता हूँ, (1)
और आप (स) को इस शहर में हलाल कर लिया गया है, (2)
और (क़सम खाता हूँ) वालिद की और औलाद की, (3)
तहक़ीक़ हम ने इन्सान को मुशक़्क़त में (गिरफ़्तार) पैदा किया। (4)
क्या वह गुमान करता है कि उस पर हरगिज़ किसी का बस नहीं चलेगा? (5)
वह कहता है कि मैं ने ढेरों माल उड़ा दिया। (6)
क्या वह गुमान करता है कि उस को किसी ने नहीं देखा? (7)
क्या हम ने नहीं बनाईं? उस की दो आँखें, (8)
और ज़बान और दो होंट, (9)
और हम ने उसे दो रास्ते दिखाए। (10)
पस वह दाख़िल न हुआ “अक़्बा” (घाटी) में। (11)
और तुम क्या मझे कि “अक़्बा” क्या है? (12)
गर्दन छुड़ाना (असीर का आज़ाद कराना)। (13)
या खाना खिलाना भूक वाले दिन में, (14)
क़राबतदार (रिश्तेदार) यतीम को, (15)
या ख़ाक नशीन मिस्कीन को। (16)
फिर हो उन लोगों में से जो ईमान लाए और उन्हों ने बाहम वसीयत की सब्र की और बाहम रहम खाने की। (17)
यही लोग हैं ख़ुश नसीब। (18)
और जिन लोगों ने हमारी आयतों का इन्कार किया वह बदबख़्त लोग हैं। (19)
उन पर आग मूंदी हुई है (उन्हें आग में बन्द कर दिया गया है)। (20)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रह्म करने वाला है

क़सम है सूरज की और उस की रोशनी की, (1)
और चाँद की जब उस के पीछे से निकले। (2)
और दिन की जब वह उसे रोशन कर दे, (3)
और रात की जब वह उसे ढांप ले, (4)
और क़सम है आस्मान की और जिस ने उसे बनाया, (5)

और ज़मीन की और जिस ने उसे फैलाया, (6)
और इन्सान की और जिस ने उसे दरुस्त किया, (7)
फिर डाली उस के दिल में उस के गुनाह और परहेज़गारी (की समझ)। (8)
तहक़ीक़ कामयाब हुआ जिस ने उस को पाक किया, (9)
और तहक़ीक़ नामुराद हुआ जिस ने उसे ख़ाक में मिलाया। (10)
समूद ने अपनी सरकशी (कि वजह) से झुटलाया, (11)
जब उन का बदबख़्त उठ खड़ा हुआ। (12)
तो उन से अल्लाह के रसूल ने कहा: (ख़बरदार हो) अल्लाह की ऊँटनी और उस के पानी पीने की बारी से। (13)
फिर उन्हों ने उस को झुटलाया और उस की कूंचे काट डालीं, फिर उन के रब ने उन पर उन के गुनाह के सबब हलाकत डाली, फिर उन्हें बराबर कर दिया, (14)
और वह उस के अन्जाम से नहीं डरता। (15)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

रात की क़सम जब वह ढांप ले, (1)
और दिन की जब वह रोशन हो, (2)
और उस की जो उस ने नर ओ मादा पैदा किए। (3)
बेशक तुम्हारी कोशिशें मुख़्तलिफ़ हैं। (4)
सो जिस ने दिया और परहेज़गारी इख़्तियार की, (5)
और अच्छी बात को सच जाना, (6)
पस हम अ़नक़रीब उस के लिए आसानी (की तौफ़ीक़) कर देंगे। (7)
और जिस ने बुख़्ल किया और बेपरवाह रहा। (8)
और झुटलाया अच्छी बात को, (9)
पस हम अ़नक़रीब उस के लिए दुश्वारी (ग़लत रास्ता) आसान कर देंगे। (10)
और उस का माल उस को फ़ाइदा न देगा जब वह नीचे गिरेगा। (11)
बेशक हमारा ज़िम्मा है राह दिखाना। (12)
और बेशक दुनिया ओ आख़िरत हमारे हाथ में है। (13)
पस मैं तुम्हें डराता हूँ भड़क्ती हुई आग से। (14)
उस में सिर्फ़ बदबख़्त दाख़िल होगा, (15)
जिस ने झुटलाया और मुँह मोड़ा। (16)
और अ़नक़रीब उस से परहेज़गार बचा लिया जाएगा। (17)
जो अपना माल देता है (अपना दिल) पाक साफ़ करने को। (18)

وَالْاَرْضِ وَمَا طَحٰىهَا ۝٦ وَنَفْسٍ وَّمَا سَوّٰىهَا ۝٧ فَاَلْهَمَهَا فُجُوْرَهَا

और ज़मीन की	और जिस	उसे फैलाया	6	और नफ़्स (इन्सान) की	और जिस	उसे दुरुस्त किया	7	उस के दिल में डाली	उस का गुनाह

وَتَقْوٰىهَا ۝٨ قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰىهَا ۝٩ وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسّٰىهَا ۝١٠

और उस की परहेज़गारी	8	कामयाब हुआ	जो	उस को पाक किया	9	और तहक़ीक़ नामुराद हुआ	जो	उसे ख़ाक में मिलाया	10

كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ بِطَغْوٰىهَآ ۝١١ اِذِ انْۢبَعَثَ اَشْقٰىهَا ۝١٢ فَقَالَ لَهُمْ

झुटलाया	समूद	अपनी सरकशी	11	जब	उठ खड़ा हुआ	उस का बद बख़्त	12	तो कहा	उन से

رَسُوْلُ اللّٰهِ نَاقَةَ اللّٰهِ وَسُقْيٰهَا ۝١٣ فَكَذَّبُوْهُ فَعَقَرُوْهَا ۟ فَدَمْدَمَ

अल्लाह का रसूल	अल्लाह की ऊँटनी	और उस की पानी की बारी	13	फिर उस को झुटलाया	फिर उस की कूंचे काट डालीं	फिर हलाकत डाली

عَلَيْهِمْ رَبُّهُمْ بِذَنْۢبِهِمْ فَسَوّٰىهَا ۝١٤ وَلَا يَخَافُ عُقْبٰهَا ۝١٥ ع ١٥ ١٦

उन पर	उन का रब	उन के गुनाह के सबब	फिर उन्हें बराबर कर दिया	14	और वह नहीं डरता	उस का अन्जाम	15

اٰيَاتُهَا ٢١ ❀ (٩٢) سُوْرَةُ الَّيْلِ ❀ رُكُوْعُهَا ١

आयात 21 | (92) सूरतुल लैल रात | रुकूअ 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰى ۝١ وَالنَّهَارِ اِذَا تَجَلّٰى ۝٢ وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ

रात की क़सम	जब	वह ढांप ले	1	और दिन की	जब वह रोशन हो	2	और जो उस ने पैदा किया	नर

وَالْاُنْثٰٓى ۝٣ اِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتّٰى ۝٤ فَاَمَّا مَنْ اَعْطٰى وَاتَّقٰى ۝٥

और मादा	3	बेशक	तुम्हारी कोशिश	मुख़्तलिफ़	4	सो जो	जिस	दिया	और परहेज़गारी इख़्तियार की	5

وَصَدَّقَ بِالْحُسْنٰى ۝٦ فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْيُسْرٰى ۝٧ وَاَمَّا

और सच जाना	अच्छी बात को	6	पस अ़नक़रीब उसे आसान कर देंगे	आसानी	7	और जो

مَنْۢ بَخِلَ وَاسْتَغْنٰى ۝٨ وَكَذَّبَ بِالْحُسْنٰى ۝٩ فَسَنُيَسِّرُهٗ

जिस ने बुख़्ल किया	और बेपरवाह रहा	8	और झुटलाया	अच्छी बात को	9	पस अ़नक़रीब उसे आसान कर देंगे

لِلْعُسْرٰى ۝١٠ وَمَا يُغْنِيْ عَنْهُ مَالُهٗٓ اِذَا تَرَدّٰى ۝١١ اِنَّ عَلَيْنَا

दुश्वारी-सख़्ती	10	और न फ़ाइदा देगा	उस को	उस का माल	जब नीचे गिरेगा वह	11	बेशक हम पर (हमारा ज़िम्मा)

لَلْهُدٰى ۝١٢ وَاِنَّ لَنَا لَلْاٰخِرَةَ وَالْاُوْلٰى ۝١٣ فَاَنْذَرْتُكُمْ نَارًا

अलबत्ता राह दिखाना	12	और बेशक	हमारे लिए	आख़िरत	और दुनिया	13	पस मैं तुम्हें डराता हूँ	आग

تَلَظّٰى ۝١٤ لَا يَصْلٰىهَآ اِلَّا الْاَشْقَى ۝١٥ الَّذِيْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ۝١٦

भड़कती हुई	14	न दाख़िल होगा उस में	मगर	इन्तिहाई बद बख़्त	15	जिस ने झुटलाया	और मुँह मोड़ा	16

وَسَيُجَنَّبُهَا الْاَتْقَى ۝١٧ الَّذِيْ يُؤْتِيْ مَالَهٗ يَتَزَكّٰى ۝١٨

और अ़नक़रीब उस से बचा लिया जाएगा	बड़ा परहेज़गार	17	जो	देता है	अपना माल	पाक करने को	18

وَمَا لِاَحَدٍ عِنْدَهٗ مِنْ نِّعْمَةٍ تُجْزٰٓى ۱۹ ۙ اِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ

रज़ा	चाहता है	सिर्फ़	19	बदला दी जाए	नेमत	से	उस पर	और नहीं किसी के लिए

ع ١ ٢١ ١٧ رَبِّهِ الْاَعْلٰى ۲۰ ۚ وَلَسَوْفَ يَرْضٰى ۲۱ ع

	21	राज़ी होगा	और अ़नक़रीब	20	बुलन्द ओ बरतर	अपना रब	

آيَاتُهَا ١١ ❀ (٩٣) سُوْرَةُ الضُّحٰى ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकुअ़ 1	(93) सूरतुध धुहा रोज़े रोशन	आयात 11

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

وَالضُّحٰى ۱ ۙ وَالَّيْلِ اِذَا سَجٰى ۲ ۙ مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلٰى ۳ ط

3	बेज़ार हुआ	और न	आप का रब	आप (स) को नहीं छोड़ा	2	छाजाए	जब	और रात की	1	क़सम है धूप चढ़ने की (आफ़्ताब)

وَلَلْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْاُوْلٰى ۴ ط وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ

आप का रब	आप (स) को अ़ता करेगा	और अ़नक़रीब	4	पहली	से	आप (स) के लिए	बेहतर	और आख़िरत

فَتَرْضٰى ۵ ط اَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيْمًا فَاٰوٰى ۶ ص وَوَجَدَكَ ضَآلًّا

बेख़बर	और आप (स) को पाया	6	पस ठिकाना दिया	यतीम	आप (स) को पाया	क्या नहीं	5	आप राज़ी हो जाएंगे

فَهَدٰى ۷ ص وَوَجَدَكَ عَآئِلًا فَاَغْنٰى ۸ ط فَاَمَّا الْيَتِيْمَ فَلَا تَقْهَرْ ۹ ط

9	तो क़हर न करें	यतीम	पस जो	8	तो ग़नी कर दिया	मुफ़लिस	और आप (स) को पाया	7	तो हिदायत दी

ع ١ ١١ ١٨ وَاَمَّا السَّآئِلَ فَلَا تَنْهَرْ ۱۰ ط وَاَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ۱۱ ع

11	सो इज़्हार करें	अपना रब	नेमत	और जो	10	तो न झिड़कें	सवाल करने वाला	और जो

آيَاتُهَا ٨ ❀ (٩٤) سُوْرَةُ الشَّرْحِ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकुअ़ 1	(94) सूरतुश शर्ह खोलना	आयात 8

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

اَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ۱ ۙ وَوَضَعْنَا عَنْكَ وِزْرَكَ ۲ ۙ

2	आप (स) का बोझ	आप (स) से	और हम ने उतार दिया	1	आप (स) का सीना	आप (स) के लिए	खोल दिया	क्या नहीं

الَّذِیْٓ اَنْقَضَ ظَهْرَكَ ۳ ۙ وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ۴ ط فَاِنَّ مَعَ

साथ	पस बेशक	4	आप (स) का ज़िक्र	आप (स) के लिए	और हम ने बुलन्द किया	3	आप (स) की पुश्त	तोड़ दी	जो-जिस

الْعُسْرِ يُسْرًا ۵ ۙ اِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۶ ط فَاِذَا فَرَغْتَ فَانْصَبْ ۷ ۙ

7	मेहनत करें	आप (स) फ़ारिग़ हों	पस जब	6	आसानी	साथ दुश्वारी	बेशक	5	आसानी	दुश्वारी

ع ١ ٨ ١٩ وَاِلٰى رَبِّكَ فَارْغَبْ ۸ ع

	8	रग़बत करें	अपना रब	और तरफ़		

और किसी का उस पर एहसान नहीं कि जिस का बदला दे, (19) सिर्फ़ अपने बुज़ुर्ग ओ बरतर रब की रज़ा चाहता है। (20) और अ़नक़रीब राज़ी होगा। (21)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

क़सम है आफ़्ताब की रोशनी की, (1) और रात की जब वह छाजाए, (2) आप (स) के रब ने आप (स) को नहीं छोड़ा और न बेज़ार हुआ। (3) और आख़िरत आप (स) के लिए पहली (हालत) से बेहतर है। (4) और अ़नक़रीब आप (स) को आप का रब अ़ता करेगा, पस आप (स) राज़ी हो जाएंगे। (5) क्या आप (स) को यतीम नहीं पाया? पस ठिकाना दिया, (6) और आप (स) को बेख़बर पाया तो हिदायत दी, (7) और आप (स) को मुफ़लिस पाया तो ग़नी कर दिया। (8) पस जो यतीम हो उस पर क़हर न करें, (9) और जो सवाल करने वाला हो उसे न झिड़कें। (10) और जो आप (स) के रब की नेमत है उसे इज़्हार करें। (11)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

क्या हम ने आप (स) का सीना नहीं खोल दिया? (1) और आप (स) से आप का बोझ उतार दिया। (2) जिस ने तोड़ दी (झुका दी) आप (स) की पुश्त, (3) और हम ने आप (स) का ज़िक्र बुलन्द किया। (4) पस बेशक दुश्वारी के साथ आसानी है। (5) बेशक दुश्वारी के साथ आसानी है। (6) पस जब आप (स) फ़ारिग़ हों तो (इबादत में) मेहनत करें। (7) और अपने रब की तरफ़ रग़बत करें (दिल लगाएं)। (8)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है
क़सम है अंजीर की और ज़ैतून की, (1)
और तूरे सीना की, (2)
और इस अम्न वाले शह्र की, (3)
अलबत्ता हम ने इन्सान को बेहतरीन साख़्त में पैदा किया। (4)
फिर उसे सब से नीची (पस्त तरीन) हालत में लौटा दिया, (5)
सिवाए उन लोगों के जो ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए तो उन के लिए ख़तम न होने वाला अजर है। (6)
पस कौन झुटलाएगा आप (स) को इस के बाद रोज़े जज़ा ओ सज़ा के मामले में? (7)
क्या अल्लाह सब हाकिमों से बड़ा हाकिम नहीं है? (8)
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है
पढ़िए अपने रब के नाम से जिस ने (सब को) पैदा किया, (1)
इन्सान को जमे हुए खून से पैदा किया, (2)
पढ़िए और आप (स) का रब सब से बड़ा करीम है, (3)
जिस ने क़लम से सिखाया, (4)
इन्सान को सिखाया जो वह न जानता था। (5)
हरगिज़ नहीं, इन्सान सरकशी करता है। (6)
इस वजह से कि वह अपने आप को बे नियाज़ देखता है। (7)
बेशक अपने रब की तरफ़ लौटना है। (8)
क्या तुम ने उसे देखा जो रोक्ता है। (9)
एक बन्दे को जब वह नमाज़ पढ़े। (10)
भला देखो, अगर (वह बन्दा) हिदायत पर हो, (11)
या परहेज़गारी का हुक्म देता हो। (12)
भला देखो, अगर (यह रोक्ने वाला) झुटलाता और मुँह मोड़ता हो। (13)
क्या उस ने न जाना कि अल्लाह देख रहा है? (14)
हरगिज़ नहीं, अगर बाज़ न आया तो पेशानी के बालों से (पकड़ कर) हम ज़रूर घसीटेंगे। (15)
झूटी गुनाहगार पेशानी। (16)
तो बुला ले अपनी मज्लिस (जत्थे) को, (17)

آيَاتُهَا ٨ ❀ سُوْرَةُ التِّيْنِ (٩٥) ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1	(95) सूरतुत तीन अंजीर	आयात 8

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

وَالتِّيْنِ وَالزَّيْتُوْنِ ﴿١﴾ وَطُوْرِ سِيْنِيْنَ ﴿٢﴾ وَهٰذَا الْبَلَدِ الْاَمِيْنِ ﴿٣﴾

3	अम्न वाला	शह्र	और इस	2	और तूरे सीना की	1	और ज़ैतून की	क़सम है अंजीर की

لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْٓ اَحْسَنِ تَقْوِيْمٍ ﴿٤﴾ ثُمَّ رَدَدْنٰهُ اَسْفَلَ

सब से नीचा	हम ने उसे लौटा दिया	फिर	4	सांचा (साख़्त)	बेहतरीन	में	इन्सान	अलबत्ता हम ने पैदा किया

سٰفِلِيْنَ ﴿٥﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَلَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ﴿٦﴾

6	ख़तम होने वाला	न	अजर	तो उन के लिए	नेक	और अ़मल किए	ईमान लाए	सिवाए जो लोग	5	नीचों वाला

فَمَا يُكَذِّبُكَ بَعْدُ بِالدِّيْنِ ﴿٧﴾ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَحْكَمِ الْحٰكِمِيْنَ ﴿٨﴾ ع ٨ ٢٠

8	तमाम हाकिम	सब से बड़ा हाकिम	क्या नहीं अल्लाह	7	दीन के मामले में	इस के बाद	पस कौन आप (स) को झुटलाएगा

آيَاتُهَا ١٩ ❀ سُوْرَةُ الْعَلَقِ (٩٦) ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1	(96) सूरतुल अ़लक़ जमा हुआ खून	आयात 19

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِيْ خَلَقَ ﴿١﴾ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ﴿٢﴾

2	जमा हुआ खून	से	इन्सान	पैदा किया	1	पैदा किया	जिस ने	अपना रब	नाम से	पढ़िए

اِقْرَاْ وَرَبُّكَ الْاَكْرَمُ ﴿٣﴾ الَّذِيْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ﴿٤﴾ عَلَّمَ الْاِنْسَانَ

इन्सान	सिखाया	4	क़लम से	सिखाया	वह जिस ने	3	बड़ा करीम	और आप का रब	पढ़िए

مَا لَمْ يَعْلَمْ ﴿٥﴾ كَلَّآ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَيَطْغٰٓى ﴿٦﴾ اَنْ رَّاٰهُ اسْتَغْنٰى ﴿٧﴾ اِنَّ

बेशक	7	बे नियाज़	कि अपने तईं देखे	6	सरकशी करता है	इन्सान	हरगिज़ नहीं बेशक	5	वह जानता था	जो न

اِلٰى رَبِّكَ الرُّجْعٰى ﴿٨﴾ اَرَءَيْتَ الَّذِيْ يَنْهٰى ﴿٩﴾ عَبْدًا اِذَا صَلّٰى ﴿١٠﴾

10	वह नमाज़ पढ़े	जब	एक बन्दा	9	रोकता है	वह जो	क्या आप ने देखा	8	लौटना है	अपना रब	तरफ़

اَرَءَيْتَ اِنْ كَانَ عَلَى الْهُدٰٓى ﴿١١﴾ اَوْ اَمَرَ بِالتَّقْوٰى ﴿١٢﴾ اَرَءَيْتَ اِنْ

अगर	भला देखो	12	परहेज़गारी का	या हुक्म देता	11	हिदायत	पर	हो	अगर	भला देखो

كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ﴿١٣﴾ اَلَمْ يَعْلَمْ بِاَنَّ اللّٰهَ يَرٰى ﴿١٤﴾ كَلَّا لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ ۙ

न बाज़ आया	अगर	हरगिज़ नहीं	14	देख रहा है	कि अल्लाह	क्या न जाना	13	और मुंह मोड़ता	झुटलाता

لَنَسْفَعًا بِالنَّاصِيَةِ ﴿١٥﴾ نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ﴿١٦﴾ فَلْيَدْعُ نَادِيَهٗ ﴿١٧﴾

17	अपनी मज्लिस	तो वह बुला ले	16	गुनाहगार	झूटी	पेशानी	15	पेशानी के बालों से	हम ज़रूर घसीटेंगे

ع ١٩ / ٢١ — السجدة ١٤

سَنَدۡعُ الزَّبَانِيَةَ ﴿۱۸﴾ كَلَّا ؕ لَا تُطِعۡهُ وَاسۡجُدۡ وَاقۡتَرِبۡ ﴿۱۹﴾

हम बुलाते हैं	प्यादे	18	नहीं नहीं	उस की बात न मान	और सिज्दा कर तू	और नज़्दीक हो	19

हम बुलाते हैं प्यादों को। (18) नहीं नहीं, उस की बात न मानें और आप (स) सिज्दा करें और (अपने रब की) नज़्दीकी हासिल करें। (19)

آيَاتُهَا ٥ ❀ (٩٧) سُوۡرَةُ الۡقَدۡرِ ❀ رُكُوۡعُهَا ١

आयात 5 — (97) सूरतुल क़द्र — ताक़त, बा इज़्ज़त — रुकूअ़ 1

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

اِنَّاۤ اَنۡزَلۡنٰهُ فِىۡ لَيۡلَةِ الۡقَدۡرِ ﴿۱﴾ وَمَاۤ اَدۡرٰىكَ مَا لَيۡلَةُ الۡقَدۡرِ ﴿۲﴾

बेशक	हम ने यह उतारा	में	लैलतुलक़द्र (इज़्ज़त वाली रात)	1	और क्या	आप ने समझा	क्या	लैलतुलक़द्र	2

लَيۡلَةُ الۡقَدۡرِ ۙ خَيۡرٌ مِّنۡ اَلۡفِ شَهۡرٍ ﴿۳﴾ تَنَزَّلُ الۡمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوۡحُ فِيۡهَا

लैलतुलक़द्र	बेहतर	से	हज़ार महीने	3	उतरते हैं	फ़रिश्ते	और रूह	उस में

وقف النبي ﷺ

بِاِذۡنِ رَبِّهِمۡ ۚ مِّنۡ كُلِّ اَمۡرٍ ﴿۴﴾ سَلٰمٌ ۛ هِىَ حَتّٰى مَطۡلَعِ الۡفَجۡرِ ﴿۵﴾

ع ٥ / ٢٢ — الثالثة — معانقة ١٨ عند المتأخرين ١٢

हुक्म से	उन का रब	से	हर	काम	4	सलामती	वह	जब तक	तुलूअ़ होना	फ़ज्र (सुबह)	5

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है
बेशक हम ने यह (क़ुरआन) उतारा लैलतुलक़द्र में। (1) और आप क्या जानें कि "लैलतुलक़द्र" क्या है? (2) लैलतुलक़द्र हज़ार महीनों से बेहतर है, (3) इस में उतरते हैं फ़रिश्ते और रूह (रूहुल अमीन) अपने रब के हुक्म से हर काम (के इन्तिज़ाम के लिए)। (4) तुलूअ़ फ़ज्र तक, यह रात सलामती (ही सलामती) है। (5)

آيَاتُهَا ٨ ❀ (٩٨) سُوۡرَةُ الۡبَيِّنَةِ ❀ رُكُوۡعُهَا ١

आयात 8 — (98) सूरतुल बैयि्यना — खुली दलील — रुकूअ़ 1

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

لَمۡ يَكُنِ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا مِنۡ اَهۡلِ الۡكِتٰبِ وَالۡمُشۡرِكِيۡنَ مُنۡفَكِّيۡنَ

न थे	वह जो	कुफ़्र किया	से	अहले किताब	और मुश्रिकीन	बाज़ आने वाले

حَتّٰى تَاۡتِيَهُمُ الۡبَيِّنَةُ ﴿۱﴾ رَسُوۡلٌ مِّنَ اللّٰهِ يَتۡلُوۡا صُحُفًا مُّطَهَّرَةً ﴿۲﴾

यहां तक कि	आए उन के पास	खुली दलील	1	रसूल	अल्लाह (की तरफ़) से	पढ़ता हुआ	सहीफ़े	पाक	2

فِيۡهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ ﴿۳﴾ وَمَا تَفَرَّقَ الَّذِيۡنَ اُوۡتُوا الۡكِتٰبَ اِلَّا

उस में	लिखे हुए मज़्बूत (तहरीर)	3	और न	फ़िर्क़ा फ़िर्क़ा हुए	वह जो कि किताब दिए गए (अहले किताब)	मगर

مِنۡۢ بَعۡدِ مَا جَآءَتۡهُمُ الۡبَيِّنَةُ ﴿۴﴾ وَمَاۤ اُمِرُوۡۤا اِلَّا لِيَعۡبُدُوا اللّٰهَ

उस के बाद	जब उन के पास आगई	खुली दलील	4	और न	हुक्म दिया गया	मगर	यह कि इबादत करें अल्लाह की

مُخۡلِصِيۡنَ لَهُ الدِّيۡنَ ۙ حُنَفَآءَ وَيُقِيۡمُوا الصَّلٰوةَ وَيُؤۡتُوا الزَّكٰوةَ

ख़ालिस करते हुए	उस के लिए	दीन	यक रुख़	और क़ाइम करें	नमाज़	और अदा करें	ज़कात

وَذٰلِكَ دِيۡنُ الۡقَيِّمَةِ ﴿۵﴾ اِنَّ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا مِنۡ اَهۡلِ الۡكِتٰبِ

और यह	दीन	निहायत मज़्बूत	5	बेशक	जिन लोगों ने कुफ़्र किया	से	अहले किताब

وَالۡمُشۡرِكِيۡنَ فِىۡ نَارِ جَهَنَّمَ خٰلِدِيۡنَ فِيۡهَا ؕ اُولٰٓئِكَ هُمۡ شَرُّ الۡبَرِيَّةِ ﴿۶﴾

और मुश्रिकीन	में	आग	जहन्नम	हमेशा रहेंगे	उस में	यही लोग	वह	बदतरीन	मख़्लूक़	6

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है
जिन लोगों ने कुफ़्र किया अहले किताब और मुश्रिकों में से, बाज़ आने वाले न थे यहां तक कि उन के पास खुली दलील आए, (1) अल्लाह का रसूल पाक सहीफ़े पढ़ता हुआ, (2) जिस में रास्त और दुरुस्त तहरीरें लिखी हुई हों। (3) और अहले किताब फ़िर्क़ा फ़िर्क़ा न हुए मगर उस के बाद कि उन के पास आगई खुली दलील। (4) और उन्हें सिर्फ़ यह हुक्म दिया गया था कि वह अल्लाह की इबादत करें उस के लिए ख़ालिस करते हुए दीन (बन्दगी) यक रुख़ हो कर, और नमाज़ क़ाइम करें और ज़कात अदा करें, और यही मज़्बूत दीन है। (5) बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया अहले किताब और मुश्रिकों में से, वह जहन्नम की आग में हमेशा रहेंगे, यही लोग बदतरीन मख़्लूक़ हैं। (6)

اِنَّ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمۡ خَيۡرُ الۡبَرِيَّةِ ۷

बेशक	जो लोग ईमान लाए	और उन्हों ने अ़मल किए नेक	यही लोग	वह	बेहतरीन	मख़्लूक़	7

جَزَآؤُهُمۡ عِنۡدَ رَبِّهِمۡ جَنّٰتُ عَدۡنٍ تَجۡرِىۡ مِنۡ تَحۡتِهَا الۡاَنۡهٰرُ خٰلِدِيۡنَ

उन की जज़ा	पास	उन का रब	बाग़ात	हमेशा रहने वाले	बहती हैं	उन के नीचे से	नहरें	हमेशा रहेंगे

فِيۡهَآ اَبَدًا ؕ رَضِىَ اللّٰهُ عَنۡهُمۡ وَرَضُوۡا عَنۡهُ ؕ ذٰلِكَ لِمَنۡ خَشِىَ رَبَّهٗ ۸ ع ٨ ٢٣

उस में	हमेशा हमेशा	राज़ी हुआ अल्लाह	उन से	और वह राज़ी	उस से	यह	उस के लिए जो	डरे	अपना रब	8

آيَاتُهَا ٨ ❀ سُوۡرَةُ الزِّلۡزَالِ (٩٩) ❀ رُكُوۡعُهَا ١

आयात 8 — (99) सूरतुज़ ज़िलज़ाल — भौंचाल, ज़लज़ला — रुकूअ़ 1

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اِذَا زُلۡزِلَتِ الۡاَرۡضُ زِلۡزَالَهَا ۱ وَاَخۡرَجَتِ الۡاَرۡضُ اَثۡقَالَهَا ۲

जब	हिला डाली जाए	ज़मीन	उस का ज़लज़ला	1	और बाहर निकाल डाले	ज़मीन	अपने बोझ	2

وَقَالَ الۡاِنۡسَانُ مَا لَهَا ۳ يَوۡمَئِذٍ تُحَدِّثُ اَخۡبَارَهَا ۴ بِاَنَّ

और कहेगा	इन्सान	इसे क्या हो गया?	3	उस दिन	बयान करेगी	अपनी ख़बरें (हालात)	4	क्यों कि

رَبَّكَ اَوۡحٰى لَهَا ۵ يَوۡمَئِذٍ يَّصۡدُرُ النَّاسُ اَشۡتَاتًا ۙ لِّيُرَوۡا

तेरा रब	हुक्म भेजा	उस को	5	उस दिन	बाहर निकलेंगे	लोग	मुख़्तलिफ़ गिरोहों	ताकि दिखाए

اَعۡمَالَهُمۡ ۶ فَمَنۡ يَّعۡمَلۡ مِثۡقَالَ ذَرَّةٍ خَيۡرًا يَّرَهٗ ۷

उन के आ़माल	6	पस जिस ने	की होगी	बराबर	एक ज़र्रा	नेकी	उस को देखेगा	7

وَمَنۡ يَّعۡمَلۡ مِثۡقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ۸ ع ٨ ٢٤

और जिस ने	की होगी	बराबर	एक ज़र्रा	बुराई	उस को देखेगा	8

آيَاتُهَا ١١ ❀ سُوۡرَةُ الۡعٰدِيٰتِ (١٠٠) ❀ رُكُوۡعُهَا ١

आयात 11 — (100) सूरतुल आ़दियात — दौड़ने वाले घोड़े — रुकूअ़ 1

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وَالۡعٰدِيٰتِ ضَبۡحًا ۱ فَالۡمُوۡرِيٰتِ قَدۡحًا ۲ فَالۡمُغِيۡرٰتِ صُبۡحًا ۳

क़सम है दौड़ने वाले घोड़ों की	हांपने वाले	1	चिंगारियां उड़ाने वाले	(सुम) झाड़ कर	2	ग़ारतगिरी करने वाले	सुबह को	3

فَاَثَرۡنَ بِهٖ نَقۡعًا ۴ فَوَسَطۡنَ بِهٖ جَمۡعًا ۵ اِنَّ الۡاِنۡسَانَ لِرَبِّهٖ

फिर उड़ाएं	उस से	गर्द	4	फिर जा घुसें	उस से	मजमा	5	बेशक	इन्सान	अपने रब का

لَكَنُوۡدٌ ۶ وَاِنَّهٗ عَلٰى ذٰلِكَ لَشَهِيۡدٌ ۷ وَاِنَّهٗ لِحُبِّ الۡخَيۡرِ لَشَدِيۡدٌ ۸

नाशुक्रा	6	और बेशक वह उस पर	गवाह	7	और बेशक वह	मुहब्बत में	माल ओ दौलत	अलबत्ता सख़्त	8

बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अ़मल किए नेक, यही लोग बेहतरीन मख़्लूक़ हैं। (7) उन की जज़ा उन के रब के पास हमेशा रहने वाले बाग़ात हैं, उन के नीचे नहरें बहती हैं, वह उन में हमेशा हमेशा रहेंगे, अल्लाह उन से राज़ी हुआ, और वह अल्लाह से राज़ी हुए, यह उस के लिए है जो अपने रब से डरे। (8)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

जब ज़मीन ज़लज़ले से हिला दी जाएगी, (1)
और अपने बोझ बाहर निकाल डालेगी, (2)
और कहेगा इन्सान कि इस को क्या हो गया? (3)
उस दिन वह अपने हालात बयान करेगी, (4)
क्योंकि तेरे रब ने उसे हुक्म भेजा होगा। (5)
उस दिन लोग मुख़्तलिफ़ गिरोहों में बाहर निकलेंगे ताकि उन के आ़माल उन्हें दिखाए जाएं। (6)
पस जिस ने की होगी एक ज़र्रा बराबर नेकी वह उसे देख लेगा। (7)
और जिस ने की होगी एक ज़र्रा बराबर बुराई वह उसे देख लेगा। (8)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

क़सम है दौड़ने वाले, हांपते हुए घोड़ों की, (1)
(सुम) झाड़ कर चिंगारियां उड़ाने वालों की, (2)
सुबह के वक़्त (शब खून मार कर) ग़ारतगिरी करने वालों की, (3)
फिर उस (दौड़ने) से गर्द उड़ाने वालों की, (4)
फिर उस (गर्द की आड़) से मज्मा में घुस जाने वालों की, (5)
बेशक इन्सान अपने रब का नाशुक्रा है। (6)
और बेशक वह उस पर गवाह है। (7)
और बेशक वह माल की मुहब्बत में सख़्त है। (8)

اَفَلَا يَعۡلَمُ اِذَا بُعۡثِرَ مَا فِى الۡقُبُوۡرِ ﴿٩﴾ وَحُصِّلَ مَا فِى الصُّدُوۡرِ ﴿١٠﴾

10	सीने (दिल)	में	जो	और सामने आजाएगा	9	क़ब्रों	में	जो	उठाए जाएंगे	जब	वह जानता	पस क्या नहीं

ع ١١ ١ ٢٥

اِنَّ رَبَّهُمۡ بِهِمۡ يَوۡمَئِذٍ لَّخَبِيۡرٌ ﴿١١﴾

11	ख़ूब बाख़बर	उस दिन	उन से	उन का रब	बेशक

آيَاتُهَا ١١ ❀ سُوۡرَةُ الۡقَارِعَةِ (١٠١) ❀ رُكُوۡعُهَا ١

रुकुअ़ 1 — (101) सूरतुल क़ारिआ़ — खड़खड़ाने वाली — आयात 11

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रह्‌म करने वाला है

اَلۡقَارِعَةُ ﴿١﴾ مَا الۡقَارِعَةُ ﴿٢﴾ وَمَاۤ اَدۡرٰكَ مَا الۡقَارِعَةُ ﴿٣﴾

3	क्या है खड़खड़ाने वाली	तुम समझे	और क्या	2	क्या है खड़खड़ाने वाली	1	खड़खड़ाने वाली

يَوۡمَ يَكُوۡنُ النَّاسُ كَالۡفَرَاشِ الۡمَبۡثُوۡثِ ﴿٤﴾ وَتَكُوۡنُ الۡجِبَالُ

पहाड़	और होंगे	4	बिखरे हुए	परवानों की तरह	लोग	होंगे	जिस दिन

كَالۡعِهۡنِ الۡمَنۡفُوۡشِ ﴿٥﴾ فَاَمَّا مَنۡ ثَقُلَتۡ مَوَازِيۡنُهٗ ﴿٦﴾

6	उस के वज़न	भारी हुए	जो	पस जो	5	धुन्की हुई	रंगीन ऊन की मानिंद

فَهُوَ فِىۡ عِيۡشَةٍ رَّاضِيَةٍ ﴿٧﴾ وَاَمَّا مَنۡ خَفَّتۡ مَوَازِيۡنُهٗ ﴿٨﴾

8	उस के वज़न	हल्के हुए	जो	और जो	7	पसंदीदा	ऐश ओ आराम	में	सो वह

ع ١١ ١ ٢٦

فَاُمُّهٗ هَاوِيَةٌ ﴿٩﴾ وَمَاۤ اَدۡرٰكَ مَا هِيَهۡ ﴿١٠﴾ نَارٌ حَامِيَةٌ ﴿١١﴾

11	दहकती हुई	आग	10	क्या है वह?	और तुम क्या समझे	9	हाविया	तो उस का ठिकाना

آيَاتُهَا ٨ ❀ سُوۡرَةُ التَّكَاثُرِ (١٠٢) ❀ رُكُوۡعُهَا ١

रुकुअ़ 1 — (102) सूरतुत तकासुर — कस्रत की ख़्वाहिश — आयात 8

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रह्‌म करने वाला है

اَلۡهٰكُمُ التَّكَاثُرُ ﴿١﴾ حَتّٰى زُرۡتُمُ الۡمَقَابِرَ ﴿٢﴾ كَلَّا سَوۡفَ

अ़नक़रीब	हरगिज़ नहीं	2	क़ब्रें	तुम ने ज़ियारत की	यहां तक कि	1	कस्रत की ख़्वाहिश	तुम्हें ग़फ़्लत में रखा

تَعۡلَمُوۡنَ ﴿٣﴾ ثُمَّ كَلَّا سَوۡفَ تَعۡلَمُوۡنَ ﴿٤﴾ كَلَّا لَوۡ تَعۡلَمُوۡنَ

काश तुम जानते	हरगिज़ नहीं	4	तुम जान लोगे	जल्द	हरगिज़ नहीं	फिर	3	तुम जान लोगे

عِلۡمَ الۡيَقِيۡنِ ﴿٥﴾ لَتَرَوُنَّ الۡجَحِيۡمَ ﴿٦﴾ ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيۡنَ الۡيَقِيۡنِ ﴿٧﴾

7	यक़ीन की आँख	ज़रूर उसे देखोगे	फिर	6	जहन्नम	तुम ज़रूर देखोगे	5	इल्मे यक़ीन

ع ٨ ١ ٢٧

ثُمَّ لَتُسۡـَٔلُنَّ يَوۡمَئِذٍ عَنِ النَّعِيۡمِ ﴿٨﴾

8	नेमतें	से (बाबत)	उस दिन	तुम ज़रूर पूछे जाओगे	फिर

क्या वह नहीं जानता कि जब उठाए जाएंगे मुर्दे जो क़ब्रों में हैं? (9) और हासिल कर लिया जाएगा जो सीनों में है। (10) बेशक उन का रब उस दिन उन से ख़ूब बाख़बर होगा। (11)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रह्‌म करने वाला है

खड़खड़ाने वाली, (1) क्या है खड़खड़ाने वाली? (2) और तुम क्या समझे कि क्या है खड़खड़ाने वाली? (3) जिस दिन होंगे लोग परवानों की तरह बिखरे हुए, (4) और पहाड़ होंगे धुन्की हुई रंगीन ऊन की तरह। (5) पस जिस के (नेक) वज़न भारी हुए, (6) सो वह पसंदीदा आराम में होगा। (7) और जिस के वज़न हल्के हुए, (8) तो उस का ठिकाना “हाविया” होगा। (9) और तुम क्या समझे कि वह क्या है? (10) वह आग है दहकती हुई। (11)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रह्‌म करने वाला है

तुम्हें हुसूले कस्रत की ख़्वाहिश ने ग़फ़्लत में रखा, (1) यहां तक कि तुम क़ब्रों तक पहुंच जाते हो। (2) हरगिज़ नहीं, तुम जल्द जान लोगे, (3) फिर हरगिज़ नहीं, तुम जल्द जान लोगे। (4) हरगिज़ नहीं, काश तुम इल्मे यक़ीन से जानते होते। (5) तुम ज़रूर देखोगे जहन्नम को। (6) फिर तुम उसे ज़रूर यक़ीन की आँख से देखोगे। (7) फिर तुम उस दिन ज़रूर पूछे जाओगे (सवाल जवाब होगा) नेमतों की बाबत। (8)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

ज़माने की क़सम, (1) बेशक इन्सान ख़सारे में है, (2) सिवाए उन लोगों के जो ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए और एक दूसरे को हक़ की वसीयत की और सब्र की वसीयत (तलक़ीन) की। (3)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

ख़राबी है हर ताना ज़न ऐब लगाने वाले के लिए, (1) जिस ने माल जमा किया और उसे गिन गिन कर रखा, (2) वह गुमान करता है कि उस का माल उसे हमेशा रखेगा, (3) हरगिज़ नहीं, वह ज़रूर “हुत्मा” में डाला जाएगा। (4) और तुम क्या समझे कि “हुत्मा” क्या है? (5) अल्लाह की आग भड़काई हुई, (6) जो दिलों तक जा पहुँचेगी। (7) बेशक वह उन पर ढांक कर बन्द करदी जाएगी। (8) लम्बे लम्बे सुतूनों में। (9)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

क्या आप (स) ने नहीं देखा कि आप के रब ने क्या सुलूक किया हाथी वालों से? (1) क्या उन का दाओ नहीं कर दिया बेकार? (2) और उन पर झुंड के झुंड परिन्दे भेजे (3) वह उन पर कंकरियां फेंकते थे पकी हुई मिट्टी की। (4) पस उन को खाए हुए भूसे के मानिंद कर दिया। (5)

آيَاتُهَا ٣ ❀ سُوْرَةُ الْعَصْرِ (١٠٣) ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1 — (103) सूरतुल अ़स्र — ज़माना — आयात 3

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وَالْعَصْرِ ۝١ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِيْ خُسْرٍ ۝٢ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

जो लोग ईमान लाए	सिवाए	2	ख़सारा	में	इन्सान	बेशक	1	ज़माने की क़सम

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۙ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ۝٣ ع ٣ ٢٨

3	सब्र की	और वसीयत की	हक़ की	और एक दूसरे को वसीयत की	और उन्हों ने अ़मल किए नेक

آيَاتُهَا ٩ ❀ سُوْرَةُ الْهُمَزَةِ (١٠٤) ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1 — (104) सूरतुल हुमाज़ा — ताना ज़न — आयात 9

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةِ ۝١ الَّذِيْ جَمَعَ مَالًا وَّعَدَّدَهٗ ۝٢

2	उसे गिन गिन कर रखा	माल	जमा किया	जिस	1	ऐब जू	ताना ज़न	वास्ते - हर	ख़राबी

يَحْسَبُ اَنَّ مَالَهٗٓ اَخْلَدَهٗ ۝٣ كَلَّا لَيُنْۢبَذَنَّ فِي الْحُطَمَةِ ۝٤ وَمَآ

और क्या	4	“हुत्मा”	में	ज़रूर डाला जाएगा	हरगिज़ नहीं	3	उसे हमेशा रखेगा	उस का माल	कि	वह गुमान करता है

اَدْرٰىكَ مَا الْحُطَمَةُ ۝٥ نَارُ اللّٰهِ الْمُوْقَدَةُ ۝٦ الَّتِيْ تَطَّلِعُ عَلَى

पर	जा पहुँचे वह	जो कि	6	भड़काई हुई	अल्लाह की आग	5	“हुत्मा” क्या है?	तुम समझे

الْاَفْـِٕدَةِ ۝٧ اِنَّهَا عَلَيْهِمْ مُّؤْصَدَةٌ ۝٨ فِيْ عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ ۝٩ ع ٩ ٢٩

9	लम्बे लम्बे	सुतून	में	8	बन्द की हुई	उन पर	बेशक वह	7	दिल (जमा)

آيَاتُهَا ٥ ❀ سُوْرَةُ الْفِيْلِ (١٠٥) ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1 — (105) सूरतुल फ़ील — हाथी — आयात 5

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِاَصْحٰبِ الْفِيْلِ ۝١ اَلَمْ يَجْعَلْ

कर दिया उस ने	क्या नहीं	1	हाथी वालों के साथ	तुम्हारा रब	किया	कैसा	क्या तुम ने नहीं देखा

كَيْدَهُمْ فِيْ تَضْلِيْلٍ ۝٢ وَّاَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا اَبَابِيْلَ ۝٣

3	झुंड के झुंड	परिन्दे	उन पर	और भेजे	2	गुमराही में (बेकार)	उन का दाओ

تَرْمِيْهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجِّيْلٍ ۝٤ فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّاْكُوْلٍ ۝٥ ع ٥ ٣٠

5	खाए हुए	भूसे की तरह	पस उन को कर दिया	4	संगे गिल	से	कंकरियां	फेंकते थे

آيَاتُهَا ٤ ❀ (١٠٦) سُوْرَةُ قُرَيْشٍ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1	(106) सूरह क़ुरैश क़ुरैश का क़बीला	आयात 4

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

لِاِيْلٰفِ قُرَيْشٍ ۝١ اٖلٰفِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَآءِ وَالصَّيْفِ ۝٢

2	और गर्मी	सर्दी	सफ़र	उन का मानूस करना	1	क़ुरैश	मानूस करने के सबब

فَلْيَعْبُدُوْا رَبَّ هٰذَا الْبَيْتِ ۝٣ الَّذِيْٓ اَطْعَمَهُمْ مِّنْ جُوْعٍ ۙ

भूक	से - में	उन्हें खाना दिया	जो - जिस	3	घर	इस	रब	पस चाहिए कि वह इबादत करें

ع ١ ٣١ وَّاٰمَنَهُمْ مِّنْ خَوْفٍ ۝٤

4	ख़ौफ़	से - में	और उन्हें अम्न दिया

آيَاتُهَا ٧ ❀ (١٠٧) سُوْرَةُ الْمَاعُوْنِ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1	(107) सूरतुल माऊन रोज़ाना इस्तेमाल की छोटी चीज़ें	आयात 7

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اَرَءَيْتَ الَّذِيْ يُكَذِّبُ بِالدِّيْنِ ۝١ فَذٰلِكَ الَّذِيْ يَدُعُّ الْيَتِيْمَ ۝٢

2	यतीम	धक्के देता है	जो कि	यही है वह	1	रोज़े जज़ा ओ सज़ा	झुटलाता है	वह जो कि	क्या तुम ने देखा

وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ۝٣ فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ ۝٤

4	नमाज़ियों के लिए	पस ख़राबी	3	मिस्कीन	खाना	पर	रग़बत दिलाता	और नहीं

الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ۝٥ الَّذِيْنَ هُمْ

वह	जो कि	5	ग़ाफ़िल (जमा)	अपनी नमाज़	से	वह	जो कि

ع ١ ٣٢ يُرَآءُوْنَ ۝٦ وَيَمْنَعُوْنَ الْمَاعُوْنَ ۝٧

7	आम ज़रूरत की चीज़	रोकते हैं (नहीं देते)	6	दिखावा करते हैं

آيَاتُهَا ٣ ❀ (١٠٨) سُوْرَةُ الْكَوْثَرِ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1	(108) सूरतुल कौसर बे शुमार भलाइयाँ	आयात 3

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اِنَّآ اَعْطَيْنٰكَ الْكَوْثَرَ ۝١ فَصَلِّ لِرَبِّكَ

अपने रब के लिए	पस नमाज़ पढ़ें	1	कौसर	हम ने आप (स) को अ़ता किया	बेशक हम

ع ١ ٣٣ وَانْحَرْ ۝٢ اِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْاَبْتَرُ ۝٣

3	दुम कटा - नामुराद - बे नस्ल	वह	आप (स) का दुश्मन	बेशक	2	और क़ुरबानी दें

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
क़ुरैश को मानूस करने के सबब, (1) उन्हें सर्दी गर्मी के सफ़र से मानूस करने के सबब। (2) पस चाहिए कि वह इबादत करें इस घर के रब की, (3) जिस ने उन्हें खाना दिया भूक में, और अम्न दिया ख़ौफ़ में। (4)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
क्या तुम ने उस शख़्स को देखा जो रोज़े जज़ा ओ सज़ा को झुटलाता है? (1) वही है जो यतीम को धक्के देता है, (2) और नहीं उकसाता मिस्कीन को खाना खिलाने पर। (3) पस ख़राबी है उन नमाज़ियों के लिए, (4) जो अपनी नमाज़ों से लापरवाह हैं, (5) जो दिखावा करते हैं, (6) और आम ज़रूरत की चीज़ (भी मांगी) नहीं देते। (7)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
बेशक हम ने आप (स) को "कौसर" अ़ता किया। (1) पस अपने रब के लिए नमाज़ पढ़ें और क़ुरबानी दें। (2) बेशक आप (स) का दुश्मन ही नामुराद है। (3)

آيَاتُهَا ٦ ❀ سُوْرَةُ الْكٰفِرُوْنَ (١٠٩) ❀ رُكُوْعُهَا ١

(109) सूरतुल काफ़िरून — कुफ़्र करने वाले — रुकूअ 1 — आयात 6

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۙ ١ لَاۤ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۙ ٢

2	जिस की तुम इबादत करते हो	मैं इबादत नहीं करता	1	काफ़िरो	ऐ	कह दीजिए

وَلَاۤ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُ ۚ ٣ وَلَاۤ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۙ ٤

4	जिस की तुम ने इबादत की	मैं इबादत करने वाला	और न	3	जिस की मैं इबादत करता हूँ	इबादत करने वाले	तुम	और न

وَلَاۤ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُ ؕ ٥ لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ۧ ٦ ع ٦ / ٣٤

6	मेरा दीन	और मेरे लिए	तुम्हारा दीन	तुम्हारे लिए	5	जिस की मैं इबादत करता हूँ	इबादत करने वाले	और न तुम

آيَاتُهَا ٣ ❀ سُوْرَةُ النَّصْرِ (١١٠) ❀ رُكُوْعُهَا ١

(110) सूरतुन नस्र — मदद — रुकूअ 1 — आयात 3

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ ۙ ١ وَرَاَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُوْنَ فِيْ

में	दाख़िल हो रहे हैं	लोग	और आप (स) देखें	1	और फ़तह	अल्लाह की मदद	आजाए	जब

دِيْنِ اللّٰهِ اَفْوَاجًا ۙ ٢ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ ؕ (وقف النبی ﷺ)

और बख़्शिश तलब कीजिए उस से	अपना रब	तारीफ़ के साथ	पस पाकी बयान करें	2	फ़ौज दर फ़ौज	अल्लाह का दीन

اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا ۧ ٣ ع ١ / ٣٥

3	बड़ा तौबा कुबूल करने वाला	है	बेशक वह

آيَاتُهَا ٥ ❀ سُوْرَةُ تَبَّتْ (١١١) ❀ رُكُوْعُهَا ١

(111) सूरह तब्बत — आग की लपट, शोला — रुकूअ 1 — आयात 5

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

تَبَّتْ يَدَاۤ اَبِيْ لَهَبٍ وَّتَبَّ ؕ ١ مَاۤ اَغْنٰى عَنْهُ مَالُهٗ وَمَا

और जो	उस का माल	उस के	काम आया	न	1	और वह हलाक हुआ	अबू लहब	दोनों हाथ	टूट गए

كَسَبَ ؕ ٢ سَيَصْلٰى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ۙ ٣ وَّامْرَاَتُهٗ ؕ حَمَّالَةَ

लादने वाली	और उस की बीवी	3	शोले मारती	आग	अ़नक़रीब दाख़िल होगा	2	उस ने कमाया

الْحَطَبِ ۚ ٤ فِيْ جِيْدِهَا حَبْلٌ مِّنْ مَّسَدٍ ۧ ٥ ع ٥ / ٣٦

5	खजूर	से	रस्सी	उस की गर्दन	में	4	लकड़ी (ईंधन)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

कह दीजिए: ऐ काफ़िरो! (1) मैं इबादत नहीं करता जिन की तुम इबादत करते हो, (2) और न तुम इबादत करने वाले हो उस की जिस की मैं इबादत करता हूँ। (3) और न मैं इबादत करने वाला हूँ जिन की तुम ने इबादत की, (4) और न तुम इबादत करने वाले हो उस की जिस की मैं इबादत करता हूँ। (5) तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन और मेरे लिए मेरा दीन। (6)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

जब अल्लाह की मदद आजाए और फ़तह (हो जाए)। (1) और आप (स) देखें कि लोग दाख़िल हो रहे हैं अल्लाह के दीन में फ़ौज दर फ़ौज। (2) पस अपने रब की तारीफ़ के साथ पाकी बयान करें और उस से बख़्शिश तलब करें, बेशक वह बड़ा तौबा कुबूल करने वाला है। (3)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

अबू लहब के दोनों हाथ टूट गए और वह हलाक हुआ। (1) उस के काम न आया उस का माल और जो उस ने कमाया। (2) अ़नक़रीब दाख़िल होगा शोले मारती हुई आग में। (3) और उस की बीवी लादने वाली ईंधन, (4) उस की गर्दन में खजूर की छाल की रस्सी होगी। (5)

آيَاتُهَا ٤ ❀ سُوْرَةُ الْإِخْلَاصِ (١١٢) ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1	(112) सूरतुल इख़लास ख़ालिस	आयात 4

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ١ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ٢ لَمْ يَلِدْ

न उस ने जना	2	बेनियाज़	अल्लाह	1	एक	अल्लाह	वह	कह दीजिए

ع ١ ٤ ٣٨ وَلَمْ يُوْلَدْ ٣ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ٤

4	कोई	हमसर	उस का	है	और नहीं	3	और न वह जना गया

آيَاتُهَا ٥ ❀ سُوْرَةُ الْفَلَقِ (١١٣) ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1	(113) सूरतुल फ़लक़ सुबह	आयात 5

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ١ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ٢

2	जो उस ने पैदा किया	शर	से	1	सुबह	रब की	मैं पनाह में आता हूँ	कह दीजिए

وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ٣ وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ

फूंके मारने वालियां	शर	और से	3	छा जाए	जब	अन्धेरा	शर	और से

ع ١ ٥ ٣٨ فِي الْعُقَدِ ٤ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ٥

5	वह हसद करे	जब	हसद करने वाले	और शर से	4	गिरहें	में

آيَاتُهَا ٦ ❀ سُوْرَةُ النَّاسِ (١١٤) ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1	(114) सूरतुन नास लोग	आयात 6

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ١ مَلِكِ النَّاسِ ٢ اِلٰهِ النَّاسِ ٣

3	लोग	माबूद	2	लोग	बादशाह	1	लोग	रब की	मैं पनाह में आता हूँ	कह दीजिए

مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ٤ الَّذِيْ يُوَسْوِسُ فِيْ

में	वस्वसा डालता है	जो	4	छुप कर हमला करने वाले	वस्वसा डालने वाले	शर	से

ع ١ ٦ ٣٩ صُدُوْرِ النَّاسِ ٥ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ٦

6	और इन्सान	जिन्न (जमा)	से	5	लोग	सीने (दिल)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
कह दीजिए: वह अल्लाह एक है, (1)
अल्लाह बेनियाज़ है, (2)
न उस ने (किसी को) जना और न (किसी ने) उस को जना, (3)
और उस का कोई हमसर नहीं। (4)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
कह दीजिए: मैं पनाह में आता हूँ सुबह के रब की, (1)
उस के शर से जो उस ने पैदा किया, (2)
और अन्धेरे के शर से जब कि वह छा जाए, (3)
और गिरोहों में फूंके मारने वालियों के शर से, (4)
और शर से हसद करने वाले के जब वह हसद करे। (5)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
कह दीजिए: मैं पनाह में आता हूँ लोगों के रब की, (1)
लोगों के बादशाह की, (2)
लोगों के माबूद की, (3)
वस्वसा डालने वाले, पलट पलट कर हमला करने वाले के शर से, (4)
जो वस्वसा डालता है लोगों के दिलों में, (5)
जिन्नों में से और इन्सानों में से। (6)